मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

फरवरी २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ०२

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

११वां अधिवेशन सम्बलपुर शाखा के आतिथ्य में दिनांक ३१ जनवरी २००६ को संपन्न

उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा, श्री जयनारायण मिश्र, मुख्य अतिथि, (उड़ीसा राज्य वाणिज्य एवं परिवहन मंत्री), श्री सुरेन्द्र लाठ, उड़ीसा राज्य अध्यक्ष, श्री जितेन्द्र गुप्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष, मारवाड़ी युवा मंच, श्री सतपाल मित्तल, स्वागताध्यक्ष, श्री इंदरलाल अग्रवाल, शाखा अध्यक्ष सम्बलपुर एवं श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री

विशेषः

- बुरा न मानो होली है! उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण पृष्ठः१२-१७
- रंग,गीत एवं जीत का त्योहार होली अध्यक्षीय पृष्ठः५
- श्रद्धेय बसंत कुमार जी बिड़ला एवं आदरणीया डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला को भामाशाह सेवा सम्मान से विभूषित पृष्ठः ७
- पद्म विभूषण महाश्वेता देवी से मुलाकात पृष्ठः ११

पद्म विभूषण महाश्वेता देवी
के सान्निध्य में समाज विकास

होली की शुभकामनाएँ

Insync with Nature...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exporters
(A Pioneer House for Minerals)

- * **IRON ORE -** BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES
- * **MANGANESE ORE -** BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES
- * **LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE**

:: CORPORATE OFFICE ::
RUNGTA HOUSE, CHAIBASA-833201, JHARKHAND
Phone : 06582-256561/256761/25661 Fax : 91-6582-256442
Email : rungtas@satyam.net.in, Web Site : www.rungtamines.com; GRAM : "RUNGTA"

:: CENTRAL MINES OFFICE ::
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST.-KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : 06767-275221/277481/441; Fax : 91-6767-276161; GRAM : 'RUNGTA"

:: REGISTERED OFFICE ::
8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA-700017, INDIA
Phone : 033-2281 6580/3751; Fax : 91-33-2281 5380; Email : rungta_cal@sify.com

समाज विकास

फरवरी २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक ०२ ✦ एक प्रति-१० रु. ✦ वार्षिक-१०० रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
अध्यक्षीय	५
सम्पादकीय	६
भामाशाह सेवा सम्मान	७–८
उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन	९–१०
महाश्वेता देवी से मुलाकात – शम्भु चौधरी	११
बुरा न मानो होली है	१२–१७
शिक्षा में संस्कार चाहिए – मुकुन्ददास माहेश्वरी	१८
अपने समाज पर गर्व होता है – बजरंग लाल तुलस्यान	१९
६६ सालों में सिर्फ सौ राजस्थानी फिल्में	२१
मातृभाषा की मान्यता से होगा संस्कृति का संरक्षण–डॉ. राजेश कुमार व्यास	२५–२६
डॉ. पूर्णिमा केडिया को राधाकृष्ण सम्मान	२७
गाकर जी लेता हूँ : पं. जसराज	२८
कविताएँ :	
सूनी हवेली – डॉ. एस. आर. टेलर	१७
तलाक का बढ़ता ग्राफ – कु० पूर्णिमा पाण्डा 'पूनम'	२०
शादी में कुछ नहीं चाहिये – डॉ. गीता अग्रवाल	२०
राम जी का झूलन – श्री कृष्ण अग्रवाल 'मंगल' कोलकाता	२२
गोविका – रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	२२
उजले सपने बहें – मधुर राज'मुरादाबादी'	२३
मैं नेता हूँ – डॉ. मंगलाप्रसाद	२३
बुफे डिनर – राधेश्याम पोद्दार	२४
क्या कहें – सुन्दरम बंगला	२४
युगपथ चरण:	२९–३४

समाज विकास अप्रैल माह से नई सदस्यता सूची के अनुसार प्रेषित की जायेगी। सभी प्रांतों से अनुरोध है कि वे अपने प्रान्त की सदस्यता सूची हमें भेजने की कृपा करें।

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐंबल प्रिंटर्स प्रा.लि.
४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

परिचर्चाः 'कल आज और हम'

आपके द्वारा सुसम्पादित 'समाज विकास' हर माह की तरह दिसम्बर ०८ का भी मिला। देख पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। वैसे तो 'समाज विकास' के प्रत्येक अंक पठनीय एवं मननीय होते हैं, पर यह अंक तो अनेक विशेषताओं से पूर्ण है।

प्रेरक पुरुष ''श्री भँवरमलजी सिंघी समाज सेवा पुरस्कार'' समाज सेवी श्री पुरुषोत्तमलालजी केडिया को, राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार २००८, रचना धर्मी श्री ओंकार श्री को। मानद निर्णायक महोदयों को धन्यवाद एवं पुरस्कार विजेता महानुभावों को बधाई।

'समाज' के इस अंक की परिचर्चा:' कल आज और हम' वस्तुत: मारवाड़ी समाज के अतीत को गौरव गाथा एवं वर्तमान के आशामय सोच से सुधी पाठकों को अवगत करवाया गया है। परिचर्चा के समस्त विद्वान लेखकों ने स्व विवेक एवं गहन अनुभूति से मारवाड़ी युवकों को प्रशस्त मार्ग का दिग्दर्शन करवाया है। वह सराहनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय भी है।

श्रद्धेय श्री भँवरमलजी सिंघी एवं उनके अनुज के साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध रहें हैं। परिचर्चा के अधिकांश सहभागियों से मेरा घनिष्ट परिचय है। मैं ८५ वर्षीय हूँ। मेरे समकालीन विद्वानों से यथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री नथमलजी केडिया का आशीर्वाद प्राप्त है। 'धरती धोरा रीं' के गायक पद्मश्री कन्हैयालालजी सेठिया तो मुझे अनुज के सदृश मानते रहे।

- वैद्यनाथ पंवार, वार्ड नं. १८, चूरू

बधाई .....

समाज विकास दिसम्बर २००८ का अंक पढ़ा। इसमें अच्छे लेख पढ़ने को मिलें। लेख समाज के हित में हैं। समाज ने जहाँ उन्नती की वहीं साथ–साथ समाज में खामियां भी है। इसका उल्लेख है। श्री सीताराम जी का लेख अनुकरणीय है। २१वें राष्ट्रीय अधिवेशन में महामंत्री की रिपोर्ट पढ़कर बहुत कुछ जानकारी मिली। नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलालजी रूँगटा की भी जानकारी मिली। उन्हें बधाई है। अध्यक्ष महोदय एवं महामंत्री को सभी का सहयोग रहेगा तो समाज बहुत तरक्की कर सकता है।

-किशनगोपाल पुरोहित
प्रथम तल्ला, एफ.ओ.-१, अमरज्योति पैलेस,
वरधा रोड धनटोली,
नागपुर-४४००१२ (महाराष्ट्र)

अंक संग्रहणीय दस्तावेज

'समाज विकास' दिसम्बर २००८ का अंक भेजने हेतु अनेक धन्यवाद! अंक लुभावना है। इसमें सम्मेलन के २१वें राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४ वें स्थापना दिवस समारोह की विशेष सामग्री संग्रहीत है। इस विराट आयोजन को सफ़लता पूर्वक मंचित करने हेतु केन्द्रीय संगठन एवं प्रान्तीय सम्मेलन के सभी समाज बंधु बधाई के पात्र हैं। आयोजनधर्मियों में मारवाड़ियों की तुलना में कोई शायद ही खड़ा हो।

संपादक महोदय ने ***''कल, आज और हम''*** एक शानदार परिचर्चा का संपादन किया। इसमें लगभग ३० हस्तियां हैं। प्रत्येक अपने आप में विशिष्ट, वैचारिक स्तर पर गणनीय। अलग–अलग पेशे से जुड़े लोग। मगर चिन्तन की विभिन्न धाराएँ समाज सागर में निमज्जित, सामाजिक सरोकारों से सम्बन्धित। सभी समाज का कल्याण चाहते हैं। कुछ का अपनी वाणी में युवकोचित आक्रोश एवं छटपटाहट भी है, मगर वह भी उपकार हेतु! सामाजिक संक्रमणकाल के इस भूमण्डली करण के दौर में आदर्शों, मूल्यों, परम्पराओं आदि में चूड़ांत परिवर्तन होगा। परिवर्तन की अंधी बयार में युवा समाज बड़ी तेजी के साथ छलांगे लगाना चाहता है, सो कोई खराब बात नहीं है। पैसा, शोहरत, सत्ता प्राप्ति के पीछे व्यैक्तिक उच्चकांक्षाएँ हैं, जो प्रतिस्पर्द्धा के इस मोबाइल युग में मोबाइल (गतिमान) हैं, यह मोबिलिटी (गतिशीलता) ही क्वान्टिटी से क्वालिटी में तब्दील होगी। तब ठहराव आएगा। इस भावी का अंदाजा नंदकिशोर जी ने अपने खट्टे–मीठे अनुभव से लिया है। हर अस्तित्व आपका यह अंक संग्रहणीय दस्तावेज है। आप इन्हें लेकर एक लघु पुस्तिका भी सम्मेलन से प्रकाशित कर सकते हैं। उम्दा काम हो जाएगा। मैं सभी हस्ताक्षरों को नमन करता हूँ। समाज शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से भी यह अंक पठनीय है। बधाई एवं शुभकामनाएं।

- केसरीकान्त शर्मा 'केसरी'
आनन्दपुरा, वार्ड नं0 १,
मण्डावा-३३३७०४, जिला - झुंझनू (राज.)

अध्यक्षीय:

रंग, गीत एवं प्रीत का त्योहार - होली

- नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार है। यह पर्व पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे छारण्डी, घुरण्डी, धुलेंडी, धुरखेल या धूलिवंदन कहा जाता है, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर–गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं। घर–घर में जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन हम अपनी कटुता को भूल कर समाज के कल्याण के लिये एकजूट होते हैं। पुरानी कटुता को भुलाकर फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने–बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। होली खेलने के पश्चात दिन में स्नान व विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को हमलोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, मित्रों से गले मिलते हैं और बुजुर्ग से आशीर्वाद लेते हैं।

राग–रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग–बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे–बूढ़े सभीव्यक्ति सबकुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक–झाँझ–मंजीरों की धुन के साथ नृत्य–संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। रंग के इस त्योहार को आज हम भूलते जा रहें हैं हमारी राजस्थानी संस्कृति की धरोहर इस त्योहार से हम अपना मुँह यह कहकर छुपा लेंते हैं कि ***"रंग लाग जासी"*** मेरी तो सोच है कि ***"आपाण अईंयां को रंग लगाणो चाहिजे कि साल भर वो रंग नहीं छुटे।"***

एक कवि हृदय आपरी कविता में लिख्यो है कि–

"लाल, गुलाबी, नीला, पीला .... हरा नहीं हो यार
रंग बने कुछ ऐसा जो
तन को नहीं मन को छू सके।"

होली के इस पर्व पर सम्मेलन की तरफ से सभी समाज बंधुओं से मेरी प्रार्थना रहेगी कि हम अपनी कटुता को भूलाकर सम्मेलन की मुख्यधारा से जुड़ें। कोलकाता ने सम्मेलन को हमेशा से नई ऊर्जा दी है जिसका देश के अन्य भागों में समाज के द्वारा अनुसरण किया जाता रहा है। होली के इस अवसर पर मेरी सभी वर्ग से यह प्रार्थना होगी कि हम अपने आपको स्थापित करने के अहम से अलग होकर, अपने कार्य को स्थापित करने का प्रयास करें। जिससे सम्मेलन के उद्देश्यों को हमसब मिलकर कार्यान्वित कर सकें।

होली के इस पावन अवसर पर सम्मेलन की तरफ से आप सभी को बहुत सारी शुभकामनाएँ।

सम्पादकीय:

बंग्ला संस्कृति

आज देश के सामने सबसे बड़ा खतरा संकीर्ण और असहिष्णु सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। कहीं पर भारतीय संस्कृति को बचाने के नाम पर पबों में हमला हो रहा है तो, कहीं धर्म के ठेकेदार भारतीय संस्कृति की रक्षा के नाम पर भारतीय सांस्कृति को ही बदनाम करने में लगे हैं। कहीं सत्ता के ठेकेदार अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए जातीय विद्वेष फैलाने के कार्य में लिप्त हैं, तो कहीं भाषा को लेकर जहर के बीज रोपे जा रहे हैं। मजे की बात यह है कि ये सब के सब इस देश में फल-फूल रहे हैं।

दूसरी तरफ सारा विश्व आतंकवाद का शिकार बनता जा रहा है। कुछ लोग इसे जेहाद की संज्ञा देने से भी नहीं चूकते। इन ठेकेदारों ने जहाँ एक तरफ देश की संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया है वहीं धर्म प्रायोजित आतंकवाद के कई शब्दों को नये तरह से व्याख्यायित किया है।

तीसरी तरफ विश्व आर्थिक मंदी का ग्रास बना हुआ है, खनिज संपदा में आयी एकतरफ तेजी ने कुएँ में डुबकी लगाना शुरू कर दिया। जिन वित्तीय संस्थाओं ने विश्व के कई देशों को आर्थिक संकट से कई बार उबारा, आज उन संस्थाओं ने अपने आपको दिवालिया घोषित कर दिया। जबकि भारतीय वित्तीय संस्थाओं ने इस संकट को बड़ी सावधानी से झेला। लगभग सभी संस्थाएँ पुनः सक्रिय होकर वित्तीय कारोबार करने लगी हैं।

इन सबके बाबजूद न तो कहीं से भारतीय संस्कृति कमजोर हुई है न ही किसी भाषा को कोई क्षति ही हुई है। इन दिनों कोलकाता शहर की दुकानों में बंगला भाषा के साइनबोर्ड न रहने पर कोलकाता नगर निगम ने एक अभियान के तहत अबंगाली साइनबोर्डों को हटाने का अभियान चला रखा है। शहर के हिन्दी भाषा-भाषी वर्ग को निशाना बनाकर यह अभियान चलाया जा रहा है। जबकि सारा शहर अंग्रेजी विज्ञापनों से पटा हुआ है। सड़कों के चारों तरफ होर्ड़िंग-साइनबोर्ड़-ग्लोसाइन का राज हो रखा है। जिसके चलते आस-पास की हरियाली को दफ़ना दिया जाता है। शायद इनकी नजर इन ''होर्ड़िंग-साइनबोर्ड़-ग्लोसाइन'' पर नहीं है या इसका नियत्रंण करना इनका कार्य नहीं है।

बंगाल में श्री ज्योति बसु ने कभी भी 'आमरा बंगाली' या इस तरह की प्रवृति को नहीं पनपने दिया न ही इनके २५ वर्षीय स्वर्णिम कार्यकाल में किन्हीं सांप्रदायिक ताकतों ने सर उठाने की जुर्रत की। वहीं नगर निगम के इस कदम से 'आमरा बंगाली' जैसे तत्त्वों को काफी बल मिलेगा साथ ही बंगला भाषा को सम्मान दिलाने का यह रास्ता बंगाल की संस्कृति को नष्ट कर देगा।

शस्य-श्यामला धरती जहाँ रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द का जन्म हुआ हो, जहाँ रवीन्द्र नाथ ठाकुर, अमर्त्य सेन, मदर टेरेसा ने इसको विश्व के शिखर पर पहुंचाया। जहाँ महाश्वेता देवी वास करती हो। जिस शहर ने विश्वभर के साहित्यकारों को ख्याति प्रदान की हो, ऐसे शहर में इस तरह की मानसिकता का पनपना खेदजनक, ही नहीं आपत्तिजनक भी है।

इस तरह की मानसिकता से बंगला भाषा या किसी भी प्रान्तीय भाषाओं को कभी भी न तो कोई फायदा हुआ है न कभी इससे भाषा समृद्ध ही होगी। यदि बंगला भाषा से सच में लगाव ही है तो बंगला साहित्य के अनमोल खजाने को देश की अन्य राष्ट्रीय भाषाओं में रूपान्तरण करवा के बंगला साहित्यकारों के साहित्य को नया आयाम दें। इसी में हम सबका हित भी है और बंगाल की अनमोल संस्कृति को नष्ट होने से बचाया भी जा सकता है।

- शम्भु चौधरी

भामाशाह सेवा सम्मान श्रद्धेय बसंत कुमार जी बिड़ला एवं आदरणीया डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला को

श्रद्धेय बसंत कुमार जी बिड़ला एवं आदरणीया डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला को भामाशाह सेवा सम्मान से विभूषित करने हेतु रविवार ८ फरवरी २००९ को ज्ञानमंच, कोलकाता में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता श्री सीताराम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का वक्तव्य

बिड़ला परिवार का देश, विशेषकर मारवाड़ी समाज में सदैव एक विशिष्ट स्थान रहा है। इस महान परिवार का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान सर्वविदित है। लेकिन बिड़ला परिवार का देश की स्वतंत्रता, राजनीति एवं सामाजिक परिवर्तन में अभूतपूर्व योगदान का सही मूल्यांकन कभी नहीं हुआ। मारवाड़ी समाज अपने नायकों (हीरोज) चाहे वे श्री घनश्याम दास बिड़ला हों या डॉ. राम मनोहर लोहिया को उचित सम्मान एवं सही मान्यता देने में सदैव पीछे रहा है।

जी.डी. बाबू का देश की स्वतंत्रता में योगदान, गांधीजी को आर्थिक सहयोग तक ही सीमित नहीं था। गाँधीजी के साथ अपने तीस वर्षों से अधिक के गहरे रिश्तों के दौरान गाँधीजी एवं ब्रिटिश सरकार एवं राजनेताओं के बीच जो महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में संबंधों एवं समझ को स्थापित एवं विकसित कर एक कूटनीतिक एवं राजनैतिक सफलता अर्जित की उसका ऐतिहासिक महत्व रहा है। जी.डी. बाबू को निश्चित रूप से Track-2 Diplomacy का भारतीय जनक कहा जा सकता है।

स्वतंत्रता के उपरांत भी श्री बिड़ला ने, ब्रिटेन एवं भारत के बीच मित्रतापूर्ण एवं गहरे आर्थिक संबंध स्थापित करने, कॉमनवेल्थ की सदस्यता तथा कश्मीर के सवाल पर भारतीय पक्ष को ब्रिटिश सरकार, राजनेताओं एवं शीर्ष पत्रकारों के सम्मुख प्रस्तुत करने में सरदार पटेल के माध्यम से एक अति गंभीर एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री खुशवन्त सिंह ने सही कहा था – "In those days G.D. was either defending Englishmen before Bapu or Bapu before Englishmen."

एक २१ वर्षीय साधारण शिक्षित मारवाड़ी १९१६ में पहली बार गांधी जी से मिलते हैं एवं केवल ८ वर्षों के सम्पर्क के पश्चात बापू घनश्यामदास जी को लिखते है – "God has given me mentors and I regard you as one of them" राष्ट्रपिता के हाथों इस महान व्यक्ति की प्रतिबद्धता, क्षमता एवं योग्यता के लिए एक अदभुत प्रमाण पत्र था।

बिड़ला परिवार सदैव प्रगतिशील, आधुनिक एवं सुधारक विचारवादी का रहा। १९०० के आसपास का मारवाड़ी समाज सनातनी एवं सुधारक – दो भागों में विभक्त था। बिड़ला परिवार को भी जाति से वहिष्कृत होना पड़ा था। जी.डी. इस अनुचित निर्णय का खुलकर एवं डटकर विरोध करना चाहते थे। वे गाँधीजी की अहिंसा की नीति का भी इस विषय में पालन करने में अपने आप को असमर्थ पा रहे थे। लेकिन गांधीजी के समझाने पर उन्होंने टकराव का पथ त्याग दिया। श्री कालीप्रसाद खेतान की विदेश यात्रा के विरुद्ध बड़ा आंदोलन हुआ एवं उन्हें जातिच्युत कर दिया गया। १९१८ में श्री बृजमोहन बिड़ला के विवाह के अवसर पर उन्हें वापस जाति में सम्मिलित किया गया। लेकिन इसके लिए उन्हें तीर्थ यात्रा एवं प्रायश्चित करना पड़ा।

मारवाड़ी समाज में दो विचार धाराएँ स्पष्ट हो रही थी– एक जो सामाजिक जीवन में सुधार चाहते थे एवं दूसरे धर्म संबंधी कोई भी सुधार के लिए प्रस्तुत नहीं थे।

ऐसे समय में ही १९३५ में रायबहादुर रामदेव चोखानी के सभापतित्व में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना मारवाड़ी देशी प्रजा के राजनैतिक अधिकारों के लिए हुई। सनातनी वर्ग का इतना प्रबल प्रभाव था कि सम्मेलन को अपने आरम्भिक १०–१२ वर्षों तक समाज सुधार के क्रार्यक्रमों से दूर रखना पड़ा। १९४७ में स्वनामधन्य स्व. बृजलाल बियाणी के सभापतित्व में समाज का आह्वान करते हुए कहा कि ''अब समय आ गया है कि सम्मेलन समाज सुधार के काम में तत्परता से लग जाए। समाज के स्वरूप को बदलने का भार उस पर है।''

सम्मेलन ने बाल विवाह, पर्दा प्रथा, नारी प्रताड़ना, मृत भोज, दहेज–दिखावा आदि कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन किये, लाठियाँ खाई एवं बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, सादगी आदि का समर्थन करते हुए समाज सुधार एवं समरसता का नारा दिया।

समाज में तेजी से एक बदलाव आया है। अनेक परिवर्तन हुए हैं– कुछ शुभ, कुछ अशुभ। समाज काफी सीमा तक पुरानी सामाजिक रूढ़ियों के बंधन से मुक्त हुआ है। लेकिन अंध विश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के जाल से हम सम्पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुए हैं– विशेष कर नारी समाज।

समाज शिक्षित हुआ है, लेकिन सुधार अभी बाकी है। मारवाड़ी समाज अपनी जिन खूबियों के लिए जाना जाता रहा है, उन्हें खो रहा है। संचय की प्रवृत्ति का ह्रास हुआ है एवं झूठा दिखावा एवं प्रदर्शन बढ़ रहा है। व्यवसाय में जुबान की कीमत एवं ईमानदारी में कमी आयी है। एक समय कहा जाता था ''न खाता सही न बही सही, जो मारवाड़ी कहे वही सही''। यहाँ तक कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने १९४५ में प्रकाशित अपनी पुस्तक Discovery of India में इसकी चर्चा की है – "The Marwari from Rajputana used to control internal trade and finance. They were the big financers as well as small village bankers, a noter from a well known Marwari financial house would behonoured any where in india and even abroad." ईमानदारी में कमी आयी है। टूटते परिवार, पारिवारिक अनुशासन का अभाव, बढ़ते तलाक, टूटते विवाह, बड़ों के प्रति सम्मान में लगातार कमी–हमारे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट आयी है।

अर्थ के बढ़ते महत्व ने नयी गम्भीर सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। हालाँकि पैसा हमारे समाज में सदैव ही कुछ ज्यादा बोलता आया है। १९५३ में कोलकाता के मोहम्मद अली पार्क में सम्बोधित करते हुए ***सम्मेलन सभापति आदरणीय सेठ गोविन्द दास ने कहा था- ''हमें टका धर्म को अलविदा कर देना है। आज समाज की मुठ्ठी में धन नहीं, धन की मुट्ठी में समाज है। जहाँ राजस्थानी शब्द से वीर-संस्कृति की झंकार निकलती है वहाँ मारवाड़ी शब्द केवल धन संस्कृति का द्योतक रह गया है।''***

बिड़ला परिवार, मारवाड़ी समाज के लिए सदैव एक आदरणीय, आदर्श, अनुकरणीय एवं प्रेरक परिवार रहा है। गांधी जी बराबर कहा करते थे कि सामाजिक क्रांति का काम राजनैतिक क्रांति की अपेक्षा कई गुणा अधिक जटिल एवं कठिन है। सामाजिक प्रश्नों को कोई कोर्ट–कचहरी नहीं सुलझा सकती। यह सुधार समाज को स्वयं करना है एवं मेरा पूर्ण विश्वास है कि बिड़ला परिवार एवं विशेषकर आदरणीय बसन्त कुमार जी बिड़ला एवं श्रद्धेया डा. श्रीमती सरला जी बिड़ला, समाज सुधार के रथ के कृष्ण–रूपी सारथी बन समाज में शुभ परिवर्तन का श्री गणेश कर सकते हैं।

कुछ दशकों पहले तक समाज का धनिक वर्ग समाजिक कार्यों में पूरा भाग लेता था, समाज को दिशा–निर्देश प्रदान करता था, पंचायत के माध्यम से विवादों का निपटारा करता था एवं अनुचित सामाजिक कार्यों के लिए दंड भी देता था। पंचायत का भय था, समाज का डर था। परन्तु आज इस दिशा में धनिक वर्ग उदासीन है।

इस संदर्भ में एक घटना की चर्चा कर मैं अपनी वाणी को विराम दूंगा–१९१७ की बात है। कोलकाता में जोरों से चर्चा हुई कि घी में चर्बी मिलाई जाती है। समाज में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हो रहा था। मारवाड़ी एसोसियेशन, जो उस समय की सबसे महत्वपूर्ण मारवाड़ी समाज की संस्था थी (जो बाद में भारत चेम्बर ऑफ कामर्स बन गई) ने घी के व्यापारियों से पूछताछ की, सबने मिलावट की बात से इन्कार कर दिया।

एक दिन प्रातः सर्वश्री रंगलाल जी पोद्दार, सर हरिराम गोयनका, जयनारायण जी पोद्दार, राय बहादुर शिवप्रसाद झुनझुनवाला, रायबहादुर विश्वेश्वर हलवासिया, श्री दौलतराम चोखानी, रायबहादुर रामदेव चोखानी, श्री ईश्वरदास जालान की पंचायत दल बांधकर व्यापारियों के यहाँ अचानक पहुँचे एवं नमूने के घी के पीपे ले गये। मिलावट साबित हुई। पंचायत ने बहुत लोगों को जुर्माने किये एवं जाति वहिष्कृति भी कुछ समय के लिए किया। ७५०००/– रुपया जुर्माने स्वरूप प्राप्त हुए। बाद में उस धन राशि से वृन्दावन में गोचर भूमि खरीदी गयी। समाज के हाथ में जनमत की शक्ति का एवं समाज के शीर्षस्थ धनिक वर्ग की सामाजिक प्रतिबद्धता का यह अद्भुत नमूना था।

श्री बसन्त कुमार जी बिड़ला एवं श्रीमती सरला जी बिड़ला पर ईश्वर की महती कृपा रही है। उनके दिल में समाज एवं मानवता के लिए दर्द है। आज मारवाड़ी समाज उनके सामाजिक नेतृत्व के लिए आँखे बिछाये एवं हाथ पसारे खड़ा है।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का ११वां प्रान्तीय अधिवेशन

नव निर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ (पूर्व राज्य-सभा सांसद) को सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा पद्भार ग्रहण कराते हुए।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन, उड़ीसा की ११वें अधिवेशन सम्बलपुर शाखा के आतिथ्य में दिनांक ३१.१.०९ एवं १.२.०९ को दुर्गा मंगलम् सम्बलपुर में अनुष्ठित हुआ, तथा राष्ट्रीय कार्य समिति की भी बैठक दिनांक १.२.०९ को सम्पन्न हुई। दिनांक ३१.१.०९ को संध्या ७ बजे विषय समिति की प्रान्तीय बैठक भी सम्पन्न हुई जिसमें अधिवेशन में चर्चा हेतु संगठन, सामाजिक संस्कार, समाज के द्वारा लिये जानेवाले संकल्प पत्र पर विचार विमर्श हुआ।

दिनांक १.२.०९ को समूचे प्रान्त से आये ८०० प्रतिनिधियों एवं अखिल भारतवर्षीय कार्यसमिति के सदस्यों की उपस्थिति में नव निर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ (पूर्व राज्य–सभा सांसद) राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा से पद्भार ग्रहण किया। उक्त उद्घाटन सत्र में श्री नन्दलाल रूँगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री जयनारायण मिश्र, मुख्य अतिथि (उड़ीसा राज्य वाणिज्य एवं परिवहन मंत्री) श्री सुरेन्द्र लाठ, उड़ीसा राज्य अध्यक्ष श्री जितेन्द्र गुप्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच, श्री सतपाल मित्तल स्वागताध्यक्ष, श्री इंदरलाल अग्रवाल शाखा अध्यक्ष सम्बलपुर, श्री राम अवतारजी पोद्दार राष्ट्रीय महा सचिव उपस्थित थे। सम्बलपुर की अधिष्ठात्री देवी माँ समलेश्वरी की पूजा के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने श्री सुरेन्द्र लाठ को उड़ीसा प्रान्त का अध्यक्ष पद्भार सौंपा। उड़ीसा में समाज के वरिष्ठ व्यक्तिगण श्री मदनलाल झुनझुनवाला, (सम्बलपुर), श्री मौजीराम जैन (कांटाबांजी), श्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला (राउरकेला), श्री गजानंद अग्रवाल (कटक), (जो अस्वस्थतावश अनुपस्थित थे) को सम्मानित किया गया।

तत् पश्चात श्री नन्दलाल रूँगटा ने उपस्थित प्रतिनिधियों को अपना उद्बोधन दिया। श्री सुरेन्द्र लाठ ने सम्मेलन की नई दिशा की ओर इंगित किया। उन्होंने कहा कि सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं है। वर्त्तमान स्थिति में इसकी उपयोगिता प्रतिपादित करते हुए उन्होंने कहा कि आज देश के चहुँओर विघटनकारी शक्तियों का बोलबाला है– ऐसे में एक हम ही हैं जो राष्ट्रीय एकता की, देश की सुरक्षा की बात करते हैं। ऐसे में हमें अपने कार्य को और भी अधिक गति देने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि श्री जयनारायण मिश्र ने सलाह दी की सेवा के विभिन्न प्रकल्पों को अपना कर अपनी एक पहचान दुनियाँ के सामने खड़ी कर सकते हैं। श्री जितेन्द्र गुप्ता ने कहा है कि हमें अपनी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व नहीं मिलने का एक ही कारण है कि हम असंगठित हैं। श्री इंदरलालजी अग्रवाल के धन्यवाद के पश्चात उद्घाटन समारोह का विराम हुआ।

प्रथम सत्र :

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, बरगढ़, के संयोजकत्व में संगठन पर विषद चर्चा हुई। इस सत्र का संचालन श्री जय प्रकाश लाठ ने किया। सारे प्रांत से आये प्रतिनिधियों ने संगठन को घर–घर तक पहुँचाने का संकल्प लिया तथा उड़ीसा में रह रहे १५ लाख जनसंख्या वाले इस समाज को अपने संगठन में एक सूत्र में पिरोकर अपनी राजनैतिक पहचान बनाने पर जोर दिया गया।

दूसरा सत्र :

द्वितीय सत्र का संचालन श्री शंभु जगतरामका ने किया :–

इस सत्र में प्रतिनिधियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने एवं समाज में संस्कार लाने के विभिन्न प्रयासों की खुले हृदय से चर्चा की।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का 11वां प्रान्तीय अधिवेशन

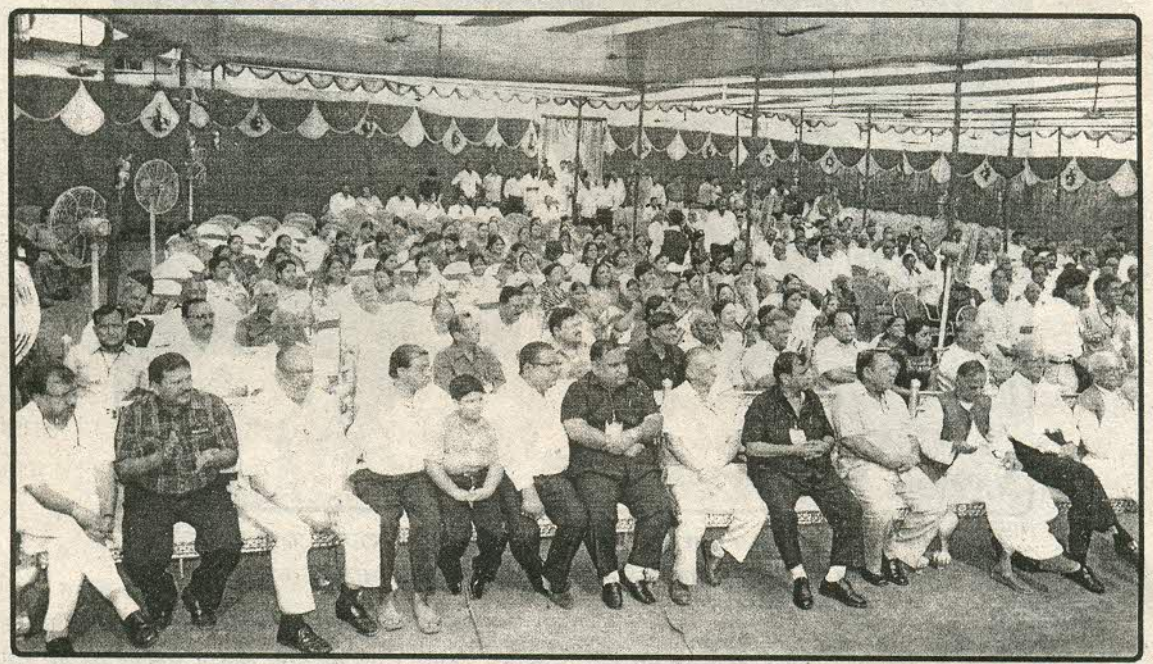

तृतीय सत्र :

इस सत्र का संचालन श्री दिनेश अग्रवाल ने किया। इस सत्र में सम्मेलन द्वारा ग्रहण किये गये। संकल्प पत्र पर विशेष रूप से चर्चा की गई। नई दिशा के विभिन्न पहलुओं को प्रतिनिधियों के सामने विचार के लिये रखा गया–एवं तत्पश्चात ग्रहण किया गया। अंत में श्री विजय केडिया के संचालन में अधिवेशन का समारोह उत्सव सम्पन्न हुआ। सम्बलपुर शाखा के अधिवेशन के आयोजन में जिन कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान था उनको स्मृति भेंट कर उन्हें उत्साहित किया गया। इसी समय श्री सुरेन्द्र लाठ ने प्रान्तीय कार्यकारिणी की घोषणा की।

: प्रान्तीय कार्यकारिणी :

उपाध्यक्ष :

श्री हरिकिशन अग्रवाल, राउरकेला
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, बरगढ़
श्री मगनलाल अग्रवाल, बलांगीर
श्री सुभाष सितानी, ब्रजराज नगर
श्री मनसुख सेठिया, भुवनेश्वर

महासचिव :

श्री विजय कुमार केडिया, सम्बलपुर

सचिव :

श्री दिनेश अग्रवाल, सम्बलपुर
श्री सम्पत अग्रवाल, बौध
श्री ईश्वरचंद जैन, टिटिलागढ़
श्री सुरेश बोंदिया, झारसुगुड़ा

कोषाध्यक्ष :

श्री सज्जन कुमार भूत

प्रकाशन :

श्री हजारी मल ओझा

समन्वय समिति :

चेयरमैन–श्री किसन लाल भरतिया,कटक

शाखा विस्तार :

चेयरमैन–श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल, सम्बलपुर

योजना (प्रकल्प) :

चेयरमैन–श्री विजय कुमार टिबड़ेवाल, भूवनेश्वर

कार्यकारी सदस्यों की एवं सलाहकारों की घोषणा निकट भविष्य में की जाएगी।

अधिवेशन की समाप्ति के पश्चात एक राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजन किया गया था जिसमें श्री नटवर लालजी लोहिया का विशेष योगदान था।•

मुलाकात:

पद्म विभूषण
महाश्वेता देवी से मुलाकात

महाश्वेता देवी के साथ समाज विकास के सहयोगी संपादक शम्भु चौधरी

महाश्वेता देवी एक ऐसा नाम जिसका ध्यान में आते ही उनकी कई–कई छवियाँ आंखों के सामने प्रकट हो जाती है। जिसने अपनी मेहनत व ईमानदारी के बलबूते अपने व्यक्तित्व को निखारा है। उन्होंने अपने को एक पत्रकार, लेखक, साहित्यकार और आंदोलन–धर्मी के रूप में विकसित किया। महाश्वेता देवी का जन्म सोमवार १४ जनवरी १९२६ को ईस्ट बंगाल जो भारत विभाजन के समय पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान में (बांग्लादेश) के ढाका शहर में हुआ था। गत १३ फरवरी २००९ को मैं कोलकाता स्थित महाश्वेता देवी के घर उनसे मिलने गया। महाश्वेता जी ने अपना सारा जीवन ही मानो आदिवासियों के साथ गुजार दिया हो। जल, जंगल और जमीन की लड़ाई के संघर्ष में खर्च कर दिया हो। उन्होंने पश्चिम बंगाल की दो जनजातियों 'लोधास' और 'शबर' विशेष पर बहुत काम किया है। इन संघर्षों के दौरान पीड़ा के स्वर को महाश्वेता ने बहुत करीब से सुना और महसूस किया है।

पीड़ा के ये स्वर उनकी रचनाओं में साफ–साफ सुनाई पड़ते हैं। उनकी कुछ महत्वपूर्ण कृतियों में 'अग्निगर्भ' 'जंगल के दावेदार' और '१०८४ की मां' हैं। आपको पद्मविभूषण पुरस्कार (२००६), रैमन मैग्सेसे (१९९७), भारतीय ज्ञानपीठ(१९९६) सहित कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। पिछले दशक में महाश्वेता देवी को कई साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आपको मैग्सेसे पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है जो एशिया महाद्विप में नोबेल पुरस्कार के समकक्ष माना जाता है।

आपने किसी पुरस्कार के लिये कार्य नहीं किया। बार–बार आदिवासी के प्रश्न पर विचलित होते इनको कई बार देखा गया। कहती हैं कि ***''हम लोग तब तक अपने आपको सभ्य नहीं कह सकते, जब तक हम आदिवासियों के जीवन को नहीं बदल देते।''*** आपने 'संथाल', 'लोधास', 'शबर' और 'मुंदास' जैसे खास आदिवासी (आदिवासी जन जाति) लोगों के जीवन को बहुत गहराई से न सिर्फ अध्ययन ही किया इन पर बहुत कुछ अपनी कथाओं में समेटने का प्रयास भी किया है, आज भी आपको ऐसे समाचार विचलित कर देतें हैं जहाँ किसी आदिवासी के ऊपर जुल्म किया जाता है। आप सदैव से सामाजिक और राजनीतिक प्रासंगिक विषयों पर अपनी कलम से प्रहार करती रहीं हैं। आप एक जगह लिखती हैं– ''एक लम्बे अरसे से मेरे भीतर जनजातीय समाज के लिए पीड़ा की जो ज्वाला धधक रही है, वह मेरी चिता के साथ ही शांत होगी.....।'' आपने अपना पूरा जीवन और साहित्य, आदिवासी और भारतीय जनजातीय समाज को समर्पित कर दिया है। इसलिए नौ कहानी संग्रह में से आठ कहानियों के केन्द्र में आदिवासी जाति केन्द्रित है, जो आज भी समाज की मुख्यधारा से कटकर जी रहा है।

लेखिका महाश्वेता देवी १४ जनवरी २००९ को ८३ वें साल की हो गई, हमने मारवाड़ी समाज की तरफ से उन्हें जन्म दिन की बधाई दी और इस अवसर पर आपको 'समाज विकास' के कुछ साहित्य विशेषांक भी भेंट किये जिसे आपने स्वीकार करते हुए कहा कि– 'खूब भालो काज कोरछो' (खूब अच्छा काम करते हो) चेहरे पर तेजस्ब की रोशनी इस तरह चमक रही थी मानो साक्षात माँ का दर्शन कर लिया हो हमने। इस अवसर पर आपने श्री केसरीकान्त शर्मा का हालचाल भी पुछा।

- शम्भु चौधरी

बुरा न मानो होली है

नन्दलाल रुँगटा : अध्यक्ष जी

श्री नन्दकिशोर जालान — भीष्म पितामह
श्री नन्दलाल रुँगटा — अध्यक्ष जी
श्री सीताराम शर्मा — खाकी वर्दी
श्री मोहनलाल तुलस्यान — आध्यात्म
श्री हरिशंकर सिंघानिया — कर्मयोगी
श्री हनुमान प्रसाद सरावगी — स्वास्तिक
श्री रतन शाह — म्हारी मारवाड़ी
श्री हरि प्रसाद कानोड़िया — पांचों अंगुली घी में
श्री राज के पुरोहित (मुम्बई) — सांसद की तैयारी

गाँव के एक सरपंच ने वाटर सप्लाई के अफसर से शिकायत की कि, हमारे गाँव में कई दिनों से पानी नहीं आ रहा है, जिसकी वजह से गाँव के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।
अफसर -"देखो सरपंच साहब, मैं आप की बात बिल्कुल नहीं मान सकता कि आपके गांव में पानी नहीं आ रहा है।"
सरपंच- "क्यों नहीं मान सकते?"
अफसर - क्योंकि आप के गांव का दूध वाला मुझे हर रोज पानी मिला दूध दे कर जाता है।

श्री ओंकार मल अग्रवाल — जेन्टलमैन
श्री बालकिशन गोयनका (चैन्नई) — सेवाव्रती
श्री गणेश प्रसाद कन्दोई — ट्रान्सपोर्ट किंग
श्री राम अवतार पोद्दार — सर्वप्रिय
श्री आत्माराम सोंथलिया — वित्त मंत्री
श्री शंभु चौधरी — लीभ एप्लिकेशन
श्री ओम प्रकाश पोद्दार — सबके विवाह करा दूंगा
श्री संजय हरलालका — नई किरण
श्री सतीश देवड़ा — अरबिन्दो देवाय
श्री संतोष जैन — आस्था
श्री धर्मचन्द अग्रवाल — श्रीराम
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल — राइजिंग स्टार
श्री नवल जोशी — काउंसिलर इन वेटिंग
श्री सूर्यकरण सारस्वा — रेस का घोड़ा
श्री सुभाष मुरारका — मस्ती
श्री रामदयाल मस्करा — बेगुसराय के राजा
श्री मौजीराम जैन — चुनाव अधिकारी
श्री सुबीर पोद्दार — किस्सा कुर्सी का
श्री राम पाल अग्रवाल 'नूतन' — गोरक्षा
श्री डॉ० श्यामसुन्दर हरलालका — असम के राजा

श्री अरुणकांत अग्रवाल — अभिनंदन
श्री हरीकृष्ण चौधरी — सेल्फमेड
श्री साधुराम बंसल — तीर्थयात्रा
श्री मोहनलाल चोखानी — समाज सुधार का दर्द
श्री इन्द्रचन्द्र संचेती — काफी हाऊस
श्री हरी प्रसाद बुधिया — शादी की पचासवीं वर्षगाँठ
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल — शिक्षाप्रेमी

पतनी पति नै चिट्ठी लिखी - थारी याद में म्हैं १५ दिना में ही सरीर स्यूं आधी होगी। म्हनै कब लेवण आवोगा? पति रो पडूतर - १५ दिन पछै!

श्री श्रवण तोदी — कामरेड
श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल — न तीन में न तेरह में
श्री सज्जन भजनका — करलो दुनिया मुट्ठी में
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल (मोतीपुर) — बेटा बाप से भी गोरा
श्री मामराज अग्रवाल — राजभवन से राष्ट्रपति भवन
श्री महाबीर प्रसाद अग्रवाल — हर मर्ज की दवा
श्री विशम्भर दयाल सुरेका — अभिभावक
श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया (रांची) — मेरा प्रेसिडेन्ट
श्री विश्वनाथ मारोठिया — अल्बर्ट पिन्टू का गुस्सा
श्री जुगल किशोर जैथलिया — युगधर्म
श्री भानीराम सुरेका — झूठी कसम
श्री विश्वम्भर नेवर — मुकदमेबाज
श्री रघु मोदी — क्या बात है
श्री बी.के.पोद्दार — संगीत–ए–बहार
श्री बालकृष्ण डालमिया — मस्ती
श्री शांतिलाल जैन — पुरानी यादें
श्री शिवभगवान खेमका — यत्र–तत्र–सर्वत्र
श्री सुशील ओझा — ऑर्गनाइजर

क्या बात है पापा! आप हर नए साल बड़े-बड़े नेताओं को और अधिकारियों को ग्रीटिंग कार्ड भेजते हैं, जबकि वे लोग आप को जानते तक नहीं? दस साल के बेटे ने पूछा।
अरे तू नहीं समझेगा बिटवा ! मुझे जब इन कार्डों के जवाब में उन लोगों के धन्यवाद पत्र आते हैं तो मैं भी उस समय अपने आप को वी.आई.पी. समझने लगता हूँ। पिता ने मुस्कुराते हुए रहस्यमयी आवाज में बेटे को पते की बात बताई।

बुरा न मानो होली है

सीताराम शर्मा : खाकी वर्दी

श्री बसंत कुमार नाहटा — बदाम की कतली
श्री डूंगरमल सुरेका — न उधो का लेना न माधो का देना
श्री महेश कुमार सहारिया — नार्थ ट्रस्ट
श्री पद्म कुमार अग्रवाल — दवा बताता हूँ
श्री पी.के.लीला — ऑडिटर
श्री पवन जैन — मेल्ट डाउन
श्री महावीर नारसरिया — अभी भी जवान हूँ
श्री राजेश खेतान — खुद से परेशान
श्री कमल गाँधी — ऊँची छलांग
श्री हर्ष नेवटिया — विनम्रता की मूर्ति
श्री हरिमोहन बांगड़ — पैसा बोलता है

बेटा- "क्या बताऊँ पापा, सामने वाले मकान में एक लड़की हर रोज खिड़की में से रुमाल हिलाती है पर खिड़की का शीशा कभी नही खोलती।"
पिता- बहको मत बेटे, वह तुझे देख कर रुमाल नहीं हिलाती । दर असल वह उस मकान की नौकरानी है जो रोज खिड़की के शीशे साफ करती है।

श्री प्रेमचन्द सुरेलिया — एवरेडी
श्री अरुण गुप्ता — नई फसल
श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया — रियल एस्टेट
श्री पुष्कर लाल केडिया — कार्यकर्त्ता नरेश
श्री सज्जन सराफ — राजनीति
श्री अजय रुंगटा — गाईडेंस
श्री जे.पी.चौधरी — दुनिया मेरी मुट्ठी में
श्री संजय बुधिया — ब्लू गाइड ब्वाय
श्री राधेश्याम गोयनका — पंच परमेश्वर
श्री रवि पोद्दार — गंगा के किनारे
श्री महेन्द्र जालान — इण्डो फ्रेंच
श्री एन.जी.खेतान — माई लार्ड
श्री एन.आर.गोयनका — फोरन टूर
श्री रामनाथ झुनझुनवाला — लाल लाल गाल
श्री सुनील कुमार डागा — विदेश में छुट्टी
श्री सुरेश कुमार बागड़ी — अगली बार

मैनेजर साहब ! अब तो मेरी पगार बढ़ा दिजिए, क्योंकि मेरी शादी हो गई है। कर्मचारी ने निवेदन किया।
"नहीं, मिल के बाहर होने वाली किसी भी दुर्घटना के लिए हम जिम्मेदार नहीं है, मैनेजर ने मुसकुराकर जवाब दिया।"

श्री श्रीकृष्ण खेतान — फैन पावर
श्री राजेन्द्र बच्छावत — जगत सेठ
श्री जे.के.जैन — दोस्त दोस्त न रहा
श्री कुंज बिहारी अग्रवाल — होजियरी पार्क
श्री श्याम सुन्दर बगड़िया — साठे पर पाठा
श्री बाबूलाल धनानिया — हरियाणा नरेश
श्री बालकृष्ण माहेश्वरी — मानव सेवा
श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग — मंत्री जी
श्री ललित सकलचन्द्र गाँधी — आपकी बारी
श्री विजय कुमार मंगलुनिया — सीनियर
श्री बजरंगलाल नाहटा — मित्रता
श्री कैलाश मल दूगड़ — जी हाँ
श्री विजय कुमार गोयल — पर्दे के पीछे
श्री सोम प्रकाश गोयनका — हाजिर हूँ
श्री गोपाल सुतवाला — फुर्सत कहाँ
श्री पन्ना लाल वैद (दिल्ली) — दिल्ली का बादशाह
श्री गोविन्द शर्मा (हावड़ा) — परिपक्वता
श्री रामनिवास चोटिया (हावड़ा) — मैं साथ हूँ
श्री नारायण जैन — नई राह
श्री बंशीलाल बाहेती — चुनाव के मैदान में
श्री सांवरमल भीमसरिया — बीते दिनों की यादें

मरीज ने एक डाक्टर से पूछा आप ने दो-दो थर्मामीटर क्यो रखें हैं? डाक्टर ने जवाब दिया, एक मुँह में लगाने के लिए और दूसरा जेब में ।
मरीज, मैं आप का मतलब नहीं समझा !
डाक्टर! मतलब यह कि एक थर्मामीटर मुँह में लगाने से मुझे पता चलता है कि आप का शरीर कितना गर्म है और दूसरा जेब में लगाने से पता चलेगा है कि आप का जेब कितना गर्म है।

श्री पवन कुमार गोयनका (दिल्ली) — मैं हूँ ना
श्री लोकनाथ डोकानिया — कुर्सी की तलाश
श्री विश्वनाथ सुल्तानिया — सफल अध्यक्ष
श्री रामगोपाल बागला — मणे कोई पुछे ही कोणी
श्री श्यामलाल डोकानिया — सेवा परमोधर्म
श्री विश्वनाथ भुवालका — काम ही काम
श्री विजय कुमार गुजरवासिया — इन्सटेन्ट सोल्युशन

बुरा न मानो होली है

विजय कुमार गुजरवासिया : इन्सटेन्ट सोल्युशन

श्री विश्वनाथ सिंघानिया	सांस्कृतिक चेतना
श्री कृष्ण कुमार डोकानिया	इंसाफ का तराजू
श्री दिनेश बजाज	एकमात्र मारवाड़ी विधायक
श्री राजकुमार बोथरा	बम बोल
श्री मनोज पोद्दार	मैदान में उतरने की तैयारी
श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया	समाज सेवी
श्री श्यामानन्द जालान (कोलकात्ता)	रंग....मंच
श्री डॉ.जयप्रकाश मूंधड़ा	हर दिल अजीज
श्री दिलीप कु.मनसुखलाल गांधी	केन्द्रीय मंत्री
श्री चिरंजीलाल अग्रवाल	रिलीफ
श्री नथमल टिबड़ेवाल (पटना)	कुछ समझ में नहीं आता
श्री विनोद तोदी (पटना)	तेज रफ्तार
श्री संतोष सराफ	किसका भरोसा करें
श्री बनवारी लाल सोती	विन्डफाल
श्री मुकुन्द राठी	परचम
श्री गोविन्द राम अग्रवाल (धन्नाव़ाले)	सबका भला हो
श्री देवेन्द्र कुमार दूगड़	इंजीनियर बिजनेसमैन
श्री ओम लड़िया	रक्तदान
श्री जयगोविन्द इन्दौरिया	भाग दौड़

मोहन अपने दोस्त राकेश से कहता है, देखो दोस्त चूंकि हम लोकतंत्र प्रणाली पर विश्वास रखते हैं इसलिए हम ने अपने घर में सुख शान्ति बनाए रखने के लिए एक सिस्टम बनाया है । मेरी पत्नी वित मंत्री है। मेरी सास रक्षा मंत्री। मेरे ससुर विदेश मंत्री और साली लोक सम्पर्क मंत्री है।

राकेश- और आप शायद प्रधान मंत्री होंगे?

मोहन- नही यार, मैं तो जनता हूँ ।

श्री जुगल किशोर सराफ	मेरी सुनो
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (कोलकाता)	पीली आँखें
श्री नन्दलाल अग्रवाल	तौबा ये मतवाली चाल
श्री संदीप भुतोड़िया	वसीयत
श्री नरेश अग्रवाल(विश्वामित्र)	मेरी भी सुनो
श्री रोशनलाल धोणा	मददगार
श्री सुन्दर लाल कनोड़िया	जय हरियाणा
श्री कैलाश प्र.झुनझुनवाला,(पटना)	सम्मेलनिष्ठ

श्याम ने अपने दोस्त सुरजीत से पूछा, सुरजीत भाई, अपने घर के बाहर खड़े क्यों हो और यह चोटें कैसे लगी ?

सुरजीत- हुआ यूं कि...।

श्याम- कितनी बार कहा कि लोगों से झगड़ा मत किया करो। कमब्खत ने मार कर तेरा बुरा हाल कर दिया। बुरा हो उस का किड़े पड़े उसे..।

सुरजीत- बस बस मैं अपनी पत्नी के बारे में और गलत बातें नही सुन सकता।

श्री नन्दलाल सिंघानिया	उमंग
श्री दुर्गा प्रसाद नाथानी (कोलकात्ता)	समर्पित भाव
श्री चम्पालाल सरावगी (कोलकात्ता)	बाबा विश्वनाथ
श्री गोपी धुवालिया	लायन
श्री विश्वनाथ सराफ	हिसाब–किताब
श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी (जबलपुर)	नजर बचा के
श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय (हैदराबाद)	लंबी छलांग
श्री कमल नोपानी (पटना)	चल भाई चल
श्री धर्मचन्द जैन "रा रा" (गांधी)	राही हम प्यार के
श्री रमेश कुमार गर्ग (जबलपुर)	नया जमाना
श्री रमेश कुमार बंग (हैदराबाद)	प्रात:प्रचार
श्री हरी प्रसाद अग्रवाल	नाच न जाने आंगन टेढ़ा
श्री आत्माराम तोदी	कार्यकर्ता
श्री अनिल शर्मा	कहाँ हो यार
श्री राजीव मोहश्वरी	नई राह की तलाश
श्री संतोष कुमार हरलालका	जय हो
श्री मदन गोयल	अभी मैं जवां हूँ
श्री नीलमणि राठी	कोई मेरी भी सुनो
श्री नन्द किशोर अग्रवाल	कामरेड
श्री अशोक काजड़िया (दुर्गापुर)	हम तुम्हारे साथ हैं

पत्रकार-साहित्यकार

श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल	नई पहचान
श्री नथमल केडिया	पुरानी कहानी
श्री गजानन वर्मा	गीतों का सम्राट
श्री पद्म मेहता (राजस्थान)	राजस्थानी ज्योति
श्री डॉ.कल्याण मल लोढ़ा	साहित्य मनीषी
श्री कमल किशोर गोयनका (दिल्ली)	काम की बात
श्री हरीश भादानी (राजस्थान)	रेत'री पीड़ा

बुरा न मानो होली है

गजानन वर्मा : गीतों का सम्राट

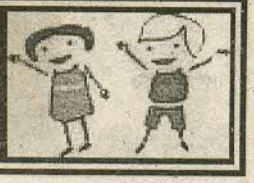

श्री सीताराम अग्रवाल — मित्रभाव
श्री प्रेम कपूर — हममें है दम
श्री ओंकार श्री — राजस्थानी पताका

बेटे - पिताजी म्हे इतणों जवान कद होस्यूं जद मम्मी नै बिना पूछ्यो घरां सूं बारनै जा सकूँ?
पिता - बेटा म्हैं ही अब तांणी इतणों जवान नीं हो सक्यो हूँ।

श्री महेश पुरोहित (नागपुर) — संगत का असर
श्री केशरीकान्त शर्मा (राजस्थान) — नयो शब्द कोष
श्री प्रताप सिंह जैन (सिलीगुड़ी) — गोरखालैण्ड
श्री डॉ० मनोहर लाल गोयल (झारखंड) — साहित्यरत्न
श्री डॉ० अरूण भारती (रानीगंज) — बहुत काम बाकी है
श्री ताऊ शेखावाटी (राजस्थान) — ताई की सेवा में
श्री अम्बू शर्मा (तैणसी) — मैं अम्बू शर्मा न जांनू
श्री मधु श्री. काबरा (समाज प्रवाह) — समाज का दर्द

अेक भिखारी महिला सूं बोल्यो, भैण जी, इण गरीब लाचार री मदद करो। महिला बोली - पण तेरा हाथ पग तो सही सलामत है फेर तूं लाचार कियां है?
भिखारी - आदत सूं लाचार हूं।

श्री प्रकाश चण्डालिया — दोस्त—दोस्त न रहा
श्री जयकुमार रुसवा — ओ प्यारी माँ
श्री विनोद रिंगानिया (असम) — मंद—मंद मुस्कान
श्री राजेन्द्र केडिया (कोलकाता) — पहचान
श्री राजेन्द्र जैन (कोलकाता) — गोविन्दा—गाविन्दा
श्री अजय मारू (रांची) — समाज का पहरेदार
श्री प्रो.शिव कुमार शर्मा (हवड़ा) — यादों कम साये में
श्री दाऊलाल कोठारी (कोलकाता) — समाज रत्न
श्री छन्दराज ऊँ 'पारदर्शी' (राजस्थान) — अति सुन्दर
श्री रामनिरंजन गोयनका (गुवाहाटी) — दुखती नब्ज़
श्री परशुराम तोदी 'पारस' — जय जवान

पत्नी, जब तुम तेजी से कार चलाते हुए टर्निंग लेते हो तो, मुझे बहुत डर लगता है कि कहीं ट्रक्कर न लग जाए।
- पति ने समझाया डरो मत, ऐसे मौको पर मेरी तरह तुम भी चुपचाप आंखे बंद कर लिया करो।

मारवाड़ी युवा मंच

श्री प्रमोद सराफ (असम) — मैं चुप हूँ
श्री अरुण बजाज (असम) — अबकी मेरी पारी
श्री ओम प्रकाश अग्रवाल (सिलीगुड़ी) — काम मिलग्यौ
श्री पवन सिकारीया (असम) — संतोषी जीव
श्री प्रमोद शाह — वो भी क्या दिन थे
श्री अनिल जैना (असम) — चुनाव की तैयारी
श्री बलराम सुल्तानिया (चायबासा) — अबोध अधिकारी
श्री अनिल जाजोदिया (वाराणसी) — जवां दिलों की धड़कन
श्री जितेन्द्र कुमार गुप्ता (उडिसा) — इन्द्रजीत

केदार री पतनी आखिरी सांस गिण रैयी थी। बा आपरै पति नै पूछी, मेरे मरणै कै पछै थारो कै होसी? पति बोल्यो - म्हैं तो पागल हो जास्यूं। पतनी - कै थे दूसरी शादी करोगा?
पति - स्याणी इतणों पागल कोनी होऊं।

श्री शिव महिपाल (दिल्ली) — राफ्ता..राफ्ता देखो
श्री ओमप्रकाश अग्रवाल (असम) — अज्ञातशत्रु
श्री गोविन्द मेवाड़ (पटना) — अबकी मेरी पारी
श्री संजय संथालिया — हम साथ—साथ हैं
श्री डॉ० अक्षय खण्डेलवाल — जमाने को दिखाना है
श्री विरेन्द्र धोका (महाराष्ट्र) — तौबा ये मतवाली चाल
श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल — प्रमोशन हो गयो
श्री गोपाल केड़िया — ऑडिट करनो पड़सी
श्री महेश जालान (पटना) — अभी तो मैं जवां हूँ
श्री डॉ.संजय अग्रवाल (रिसड़ा) — ग्रहन से निकला चाँद
श्री अनिल मोहनका (वर्णपुर) — कुछ करने की तमन्ना
श्री संजल शर्मा (सिल्लीगुड़ी) — मस्त कलंदर
श्री अतुल झवर (सिल्लीगुड़ी) — नई तकनीक
श्री किशन लाल बजाज — योग बाबा
श्री विजय कानोड़िया — दिल का दर्द
श्री संतोष कानोड़िया — कानून पण्डित

सवारियां री धक्का-मुक्की देख कंडक्टर कैवण लाग्यो, पैली लेडीज ने चढण द्यो भाई। इत्ताक में अेक बूडली सूसांवती बोली, लेडीज नै गेर खाडां में, पैली म्हनै चढण दे।

श्री महेश कुमार शाह — एक पंथ दो काज
श्री सुभाष सोंथलिया — लाडलो

बुरा न मानो होली है

जितेन्द्र कुमार गुप्ता : इन्द्रजीत

श्री कैलाश पति तोदी	ट्रडेक्स
श्री दिलीप गोयनका	बचके रहना रे बाबा
श्री विमल कुमार चौधरी	कोई काम नहीं
श्री श्याम सुन्दर सोनी (दिल्ली)	राजस्थानी शेर
श्री बुधसिंह सेठिया (दिल्ली)	नई राह
श्री विमल नवलखा (सिलीगुड़ी)	शहर बदल दी
श्री विनोद कुमार सराफ	नई शाखा
श्री अनिल डालमिया	लगे रहो
श्री मुकेश खेतान	नई राह में
श्री प्रदीप जीवराजिका (रिसड़ा)	प्रोफेशनल टच
श्री प्रमोद जैन (रिसड़ा)	सबके दाता राम
श्री किशन अग्रवाल (रिसड़ा)	सबका साथ
श्री विमल कुमार चौधरी (उत्तर कोलकाता)	चौधरी का लाल
श्री श्रवण कुमार अग्रवाल	काई पुछे ही कोनी
श्री जगदीश चन्द मिश्रा 'पप्पू'	हरफनमौला
श्री रवि कुमार अग्रवाल	दिल्ली दरबार
श्री जयप्रकाश लाठ 'जप्पू'	नई पहचान
श्री अशोक अग्रवाल (रायगढ़)	काम की बात
श्री ओम प्रकाश पाटनी (महाराष्ट्र)	जय सांई बाबा

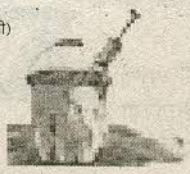

प्रेमी-क्या मै सचमुच पहला मर्द हूं जिसने तुम से प्यार किया है

प्रेमिका - हां, लेकिन सभी मर्द यही सवाल क्यों पूछते हैं?

श्री अशोक बूच्चा	रंग दे चुनरिया
श्री प्रमोद सराफ (पटना)	दोस्त–दोस्त न रहा
श्री अलोक भरतिया (झारखंड)	संचालक
श्री राजेश अग्रवाल 'हीरा' (उड़ीसा)	नई पोध
श्री कैलाशचन्द अग्रवाल	नो–मिशन
श्री गोपाल कलवानी	हर दिल अज़ीज
श्री नरेश अग्रवाल (झालदा)	नई उम्मीदें

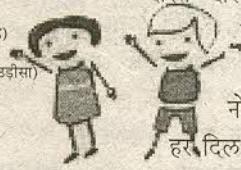

पत्नी (पति से) देखो जी, अगर तुम मेरे साथ नहीं चलोगे, तो मैं भी शोपिंग के लिए नही जाऊँगी।

क्या तुम्हें मेरे साथ जाना इतना अच्छा लगता है पति ने खुश हो कर कहा ।

अच्छा-वच्छा कुछ नहीं, पत्नी ने मुँह बनाते हुए कहा, सामान उठाने वाला भी तो कोई होना चाहिए।

श्री वीरेन्द्र जालान	जमानो बदल ग्यो
श्री राजेन्द्र कुमार दायमा	नौकरी की तलाश में
श्री ललित चौररिया	चला मुरारी हीरो बनने
श्री नीतिन बंग	मैं भी कम नहीं
श्री संजय अग्रवाल (सेन्चुरी)	आपकी सेवा में
श्री मधुसूदन सिकारिया (असम)	काई तो सुनो
श्री प्रमोद कुमार जैन (असम)	सलाहकार
श्री पुरुषोत्तम शर्मा	लापता
श्री ओमप्रकाश तुलस्यान	तेरी याद मैं
श्री मन्नालाल बैद	पतली नजर

नशे में धुत एक शराबी ने रात के दो बजे एक मकान की घंटी बजाई। खिड़की खुली और उससे झांकते हुए एक महिला चिल्लाई- भाग यहां से, लफंगा कहीं का! यह तेरा घर नहीं है।

शराबी बुदबुदाया- कमाल है! अंदाज तो हूबहू मेरी बीवी जैसा ही है।

श्री राजगोपाल सारडा	गांधी
श्री पुष्कर राज लोहिया (सिलीगुड़ी)	यादाश्त ताजी
श्री नवरतन पारिक (सिलीगुड़ी)	काई तो याद करो
श्री निरंजन अग्रवाल (सिलीगुड़ी)	मैं ठीक हूँ
श्री मुकुन्द रूंगटा (चायबासा)	समरसतो
श्री अरूण कुमार अग्रवाल	आजादी
श्री पवन अग्रवाल (असम)	समाधि में
श्री प्रदीप खदेरिया (असम)	समाज को बदल डालो
श्री नवल किशोर मोर (असम)	सब्र भी करो यार
श्री प्रवीन गोयल (झारखंड)	दायित्व मुक्त
श्री श्साम सुन्दर पोद्दार (छत्तिसगढ़)	मांई का दरबार

महिलाएं

श्रीमती पुष्पा खेतान	नई पारी
श्रीमती प्रेमा पंसारी	महिला आन्दोलन
श्रीमती अरुणा जैन	नैत्री
श्रीमती विमला डोकानिया	पति की राह पर
श्रीमती लीला शाह	यंग लेडी
श्रीमती अंजु चमड़िया	मधुर मुस्कान
श्रीमती इन्दिरा चौधरी	जोड़े से

पति पत्नी में पैसे के अहमियत को लेकर बहस चल रही थी पति उत्तेजना से बोला, सब कुछ पैसे पर टिका है । यहां तक कि यह घर भी। पत्नी बोली, सिर्फ घर ही क्यों, मैं भी।

बुरा न मानो होली है

श्रीमती प्रेमा पंसारी : महिला आन्दोलन

श्रीमती पुष्पा चोपड़ा	सेवा ही धर्म
श्रीमती सुशीला चनानी	कवित्री
श्रीमती सरला माहेश्वरी	संसद की यादें
श्रीमती मीना देवी पुरोहित	जिज्ञासू महिला
श्रीमती सुनीता झंवर	जुझारू पार्षद
डॉ तारा लक्ष्मण गहलोत (राजस्थान)	अनुभव
श्रीमती अनुराधा खेतान (कोलकाता)	नई प्रतिभा
श्रीमती कुसुम सराफ (पटना)	उम्मीदें
श्रीमती इन्दु नाथानी (कोलकाता)	सेवा ही धर्म है
श्रीमती गीता मोहता (कोलकाता)	मानव सेवा
श्रीमती सुधा जैन (कोलकाता)	सेवा ही सेवा
श्रीमती कुसुम लूंडिया (कोलकाता)	बंगाल की किरण
सुश्री राजप्रभा दसानी (कोलकाता)	साक्षात्कार

पति- अरे, सुनती हो, डाक्टरों का कहना है कि अधिक बोलने से उम्र काफी कम हो जाती है। पत्नी (मुस्कुराकर)- अब तो तुम को विश्वास हो गया ना कि मेरे उम्र पैंतालीस से घटकर पच्चीस कैसे हो गयी।

श्रीमती नीरजा जैन (दिल्ली)	संस्कार
श्रीमती वीणा मुंदड़ा	संस्कार चैनल
श्रीमती सरिता बजाज (बिहार)	नाव की यात्रा
श्रीमती पुनम जाजू (महाराष्ट्र)	मेरी भी सुनो कोई
श्रीमती कल्पना मारू (महाराष्ट्र)	जुझारू तेवर
श्रीमती सम्पत्ति मोढ़ा	जागो माँ जागो
श्रीमती अंजू अग्रवाल (दिल्ली)	नो टेंशन
सुश्री रितु शर्मा (रिसड़ा)	नच बलिए

फादर्स-डे

बेटे- मुबारक हो, आज फादर्स-डे है।
पापा- धन्यवाद बेटा, पण थानै या बात कुण बताई!
बेटे- "जी, मम्मी ण"
पापा- तो मम्मी डे कब आवैगो या बात भी बताई हसी।
बेटा- हाँ! बोली बाकी ३६५ दिन म्हारा ही है।

सभी को होली की शुभकामनाएँ!

सूनी हवेली

हवेली री पीड़
आँख्या–गीड़, उमड़ती भीड़
सूनी छोड़ग्या बेटी रा बाप !
बुझाग्या चुल्है रो ताप
कुण कमावै, कुण खावै
कुण चिणावै, कुण रेवै !
जंगी ढोलां पर चाल्योड़ी तराड़
बोदी भींता रा खिंड़ता लेवड़ा
भुजणता चितराम
चारूंमेर लाग्योड़ी लेदरी
बतावै भूत–भविस अ'र वरतमान
री कहाणी ! कीं आणी न जाणी !
आदमखोर मिनख
बैंसग्या पड्योड़ा सांसर ज्यूं
भाखर मांय टांडै
जबरी जूण'र जमारो मांडै !
काकोसा आपरै जींवतै थकां
ई भींत पर
अेक कीड़ी नी चढ़णै देवतां
पण टैम रै आगै कीं रो जोर ?
काकोसा खुद कांच री फ्रेम में
ऊपर टंगग्या
पेट भराई रै जुगाड़ मैं
सगळो कडुमो छोड्यो देस
बसग्या परदेस,
ठांवा रै ताळा, पोळ्यां में बैठग्या
ठाकर रूखाळा।
टूट्योड़ी सी खाट
ठाकरां रा ठाट
बीड्यां रो बंडल, चिलम'र सिगड़ी
कुणै में उतर्योड़ो घड़ो
गण्डक अ'र ससांर घेरणै तांई
अेक लाठी
अरड़ावै पांगली पीड़ स्यूं गैली
बापड़ी सूनी हवेली !

-डॉ. एस.आर.टेलर
अम्बिका टेलर्स, लक्ष्मणगढ़ सीकर-३३२३११

शिक्षा में संस्कार चाहिए

- मुकुन्ददास माहेश्वरी

शिक्षा जीवन निर्माण की प्रक्रिया है। मनुष्य जीवन भर ज्ञानार्जन कर सुखी सपन्न एवं प्रतिष्ठित जीवन की कामना करता है। इसीलिए शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। आजकल शिक्षा का व्यापक स्वरूप हो गया है, अब शिक्षा मात्र विद्यालयों से ही नहीं अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अर्जित की जाती है। शिक्षा की सार्थकता मात्र जीवन में भौतिक उपलब्धि प्राप्त करना नहीं, बल्कि मानवीय जीवन के सर्वांगीण विकास से है। शिक्षा का सच्चा मूल्यांकन व्यावहारिक जीवन की सफलता है। हमारा वास्तविक जीवन हमारे मानवीय संस्कारों के सम्यक आचरण पर ही अवलंवित रहता है। श्रेष्ठ संस्कार मानव जीवन को महान एवं अभिनन्दनीय बनाते हैं। संस्कार विहीन मानव पशु–तुल्य माना जाता है। संस्कार हमारी जीवन शैली एवं व्यवहार के वे मानवीय गुण हैं, जो हमारे आचरण को श्रेष्ठ एवं अनुकरणीय बनाते हैं। श्रेष्ठ मानव गुण एवं सम्यक अभ्यास ही संस्कार कहलाते हैं। यद्यपि प्रत्येक धर्म की अच्छी बातें, जिन्हें हम जीवन में अपना कर महानता की ओर अग्रसर होते हैं, संस्कार कहे जाते हैं–कर्त्तव्य परायणता, बड़ों का सम्मान,शिष्टाचार,राष्ट्रीयता,श्रम साध्यता,परोपकार आदि श्रेष्ठ आचरण के लिए आवश्यक है। संस्कार प्रत्येक धर्म, परम्परा एवं शिक्षा पद्धति के श्रेष्ठ मानवीय गुण के रूप में स्वीकार किए गए हैं।

संस्कृत साहित्य में संस्कारों का विशद विवेचन है। कहा भी गया है 'संस्कृति इति संस्कार' अर्थात् जो संस्कारित करे, वही संस्कार है। संस्कारों से युक्त जीवन एक महकते हुए गुलदस्ते की तरह होता है, जो स्वयं को तो आनंदित करता है दूसरों को भी संतुष्टि का एहसास कराता है। भारतीय संस्कारों की गति अत्यंत गहरी है। संस्कार मूल रूप से दो प्रकार के होते है (अ) पूर्व जन्म के संस्कार (ब) इहलौकिक संस्कार। कभी आपने देखा होगा कि सामान्य स्तर से भी कम बुद्धि वाले बालक कभी अचानक चमत्कारिक कार्य कर देते हैं तथा वे जीवन के हर क्षेत्र में सर्वप्रथम आने के लिए व्यग्र हो जाते हैं। यह उदाहरण पूर्व जन्म के संस्कारों के अभ्युदय होने का है। इहलौकिक संस्कार समकालीन परिस्थितियों पर विजय पाने की तत्कालिक वुद्धि ही है। संस्कार वास्तव में हमारे मन की वे सूक्ष्म अवधारणायें हैं, जो हमें निरंतर सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करती हैं। पुरुषों के जीवन में संस्कारों का चमत्कार देखा जा सकता है। आदर्श संस्कारों के सृजन में आदर्श परिवार एवं श्रेष्ठ विद्यालयों की भूमिका सदैव अच्छी मानी गयी है। शिशु इहलौकिक संस्कार परिवार, पाठशाला और वातावरण से ग्रहण करता है। वह परिवार के वातावरण से सर्वाधिक प्रभावित होता है। बचपन में माता पिता एक सुसंस्कृत बालक के व्यक्तित्व एवं भविष्य को निर्धारित करते हैं। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि परिवार का वातावरण धार्मिक एवं संस्कारयुक्त होने से बालक सभ्य, विनम्र, आज्ञाकारी एवं परोपकारी होते हैं। बालक को सुसंस्कारित बनाने के लिए जागरूक माता–पिता हमेशा एक अच्छे विद्यालय का चयन करते हैं। शिक्षा में संस्कारों का समावेश होना चाहिए। यह जन सामान्य की अभिरूचि होती है। यदि शिक्षा व्यक्ति को संस्कारवान एवं सभ्य नहीं बनाती तो निरर्थक है। कहते है कि राक्षस साक्षर होकर बंदनीय नहीं हो पाते। माननीय व्यक्तित्व में संस्कारों का होना आवश्यक है।

आधुनिक जीवन में संस्कारों के दर्शन कम होते हैं, जीवन के प्रति भौतिकवादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को अत्यधिक स्वार्थ परायण एवं संकीर्ण बना दिया है। फिल्मों एवं दूरदर्शन में प्रदर्शित पात्रों के संस्कार संपूर्ण मानव जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। अच्छे संस्कारवान व्यक्ति बहुत कम देखने को मिलते हैं। लोगों ने संस्कारों में कृत्रिमता एवं कलात्मकता दिखाना चालू कर दिया है। नई पीढ़ी के अधिकांश युवकों में आक्रमकता, चोरी, किडनेपिंग, मारधाड़ की प्रवृत्ति निश्चित ही अच्छे संस्कार का परिचायक नहीं है। यहाँ तक कि हमारे स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में भी ऐसी आत्मघाती प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं।

आदर्श एवं श्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा एवं शिक्षकों में भी संस्कारों का समावेश नितांत आवश्यक है। हम बच्चों को आदर्श का पाठ पढ़ावें, इसके पूर्व स्वयं को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है। बच्चे जो देखते हैं, उसका अनुकरण भी करना चाहते हैं। उनके कोमल मन में हीरो वरशिप की मूल प्रवृत्ति होती है। अर्थात उनके जीवन का कोई न कोई रोल मॉडल होता है, जिसे वे अपने जीवन में अपनाते हैं। अधिकांश–बालक बालिकायें अपने माता–पिता शिक्षक या फिल्मी हीरो–हीरोइन से अधिक प्रभावित होती हैं। इनमें वे किसी एक को अपना आदर्श बना कर उनके गुणों, हाव भाव जीवन शैली आदि को अपनाकर तद्नुरूप स्वयं को बनाना चाहते हैं। शिक्षा हमारी अंर्तमुखी प्रतिभा को परिष्कृत कर व्यक्तित्व विकास में सहयोग प्रदान करती है, अत: शिक्षा में श्रेष्ठ संस्कारों का सृजन आवश्यक है। यही कारण है कि विद्यालयों में बालक बालिकाओं को अच्छे संस्कारों के लिये राष्ट्रगीत, प्रार्थना एवं सद्भाव पूर्ण वातावरण तैयार किया गया है। विद्यालय की दीवालों पर लिखी सुक्तियाँ मन में श्रेष्ठ संस्कारों की प्रेरणा देती हैं। शिक्षकों का व्यवहार और संस्कारों का सामंजस्य उनके व्यक्तित्व में समायोजन की भावना भर देता है। आज हमारे समाज में जो भी अवांछित उपद्रव हो रहे हैं, इसके पीछे युवकों में संस्कार हीनता है।

अत: स्वस्थ एवं सुन्दर समाज व राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा में श्रेष्ठ संस्कारों का होना एक अनिवार्य शर्त है।

अत: कहा भी गया है कि :–

सुन्दर संस्कार मानव में,
गुणवत्ता बढ़ा देते हैं।
सद्बुद्धि से व्यक्तित्व में,
सम्मान सजा देते हैं।
आज माननीय व्यक्तित्व के लिए,
सुन्दर संस्कार चाहिए।
माननीय सभ्यता के विकास के लिए,
बच्चों में श्रेष्ठ संस्कार चाहिए।

अपने समाज पर गर्व होता है

- बजरंग लाल तुलस्यान, एडवोकेट

परिचय : श्री बजरंगलाल तुलस्यान आपका जन्म २० अगस्त १९३८ को हुआ। १९५८ में कोलकाता आकर आपने बी.काम में प्रवेश लिया। इसके पश्चात १९६५ में वकालत की। आप ज्ञान भारती के मानद मंत्री पदभार पर इक्कीस वर्षों तक रहे। वर्तमान में आप इसकी कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य हैं। आप अन्य जिन संस्थानों से जुड़े हुए हैं सरस्वती देवी मदनलाल तुलस्यान चेरीटेबल ट्रस्ट, मानव सेवा ट्रस्ट, नारायणी तनधनदास देवसर ट्रस्ट, झुंझुनूं प्रगति संघ ट्रस्ट में ट्रस्टी, श्री राणी सती देवसर कीर्तन मण्डली, एक्यूप्रेसर एवं सुजोक चिकित्सा पद्धति हिलर्स एसोसिएशन में अध्यक्ष, श्री श्याम प्रेम मण्डल (काठगोला) में उपाध्यक्ष तथा परिवार मिलन में सचिव पद का दायित्व निर्वाह कर रहे हैं। श्री राणीसती मंदिर-झुंझुनूं, निखिल बंग नव वर्ष उत्सव समिति आदि की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य हैं।

आप सन् २००४ से दैनिक विश्वमित्र में प्रति सोमवार आयकर सम्बन्धी लेख निरन्तर लिख रहे हैं। जीवन के शाश्वत सिद्धान्तों पर आधारित २१ लेखों की एक पुस्तक'जीवन-पथ'आपने लिखी है।

समाज विकास, दिसम्बर २००८ के अंक में एक लेख, "अपने समाज पर रोना आता है" पढ़ा। यह लेख उसी सम्बन्ध में लिखा गया है, हालांकि उद्देश्य लेखक की बातों का विरोध करने का नहीं है। किन्तु "गिलास आधा भरा है– आधा खाली है" यह एक सोच है– एक सकारात्मक सोच और एक नकारात्मक सोच।

मारवाड़ी समाज के लिए कहा जाता है "जहाँ न पहुँची रेलगाड़ी वहाँ पहुँचा मारवाड़ी"। हम उद्यमी हैं, हममें उत्साह है, व्यवसायिक बुद्धि जन्मसिद्ध अधिकार है, समाज सेवा की भावना है, देश प्रेम है और सकारात्मक क्या नहीं है। देशवासियों की सेवा में जितना खर्च, जितना परिश्रम हमारा समाज करता है, उसकी तुलना करना कठिन है। परोपकार की भावना में कहीं कमी नहीं और संगठन भी है, 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन' जीता जागता उदाहरण है। व्यापारियों की सहायता से कितनी गोशालाएँ अभी भी चलती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, अध्यात्म ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ समाज का सराहनीय योगदान न हो। आज भी यही कहा जाता है कि समाज में कार्यकर्ताओं की कमी है धन देने वालों की नहीं।

अब रही बात "आधे गिलास खाली की" तो रोने से नहीं चलेगा, यदि हम बुजुर्ग ही रोने लगेंगे तो समाज का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। हमें प्रयत्न करना होगा और फल तो ईश्वर अवश्य देगा, यह दृढ़ विश्वास भी रखना होगा। ऐसा नहीं है कि हमारी साख अब नहीं है, व्यापार बढ़ा है, जनसंख्या बढ़ी है, लोगों की सोच बदली है, बदलाव आना स्वभाविक है। हमारी स्वयं की पांचों अंगुलिया बराबर नहीं हैं तो इतने बड़े समाज की एक सोच कैसे हो सकती है और फिर कोई अपनी बातों से मुकर जाता है तो पूरा समाज उसके लिए क्यों बदनाम हो। यह कोई गांव की बात तो है नहीं, जहाँ पंचायत के नियमों का उल्लंघन करने वाले का हुक्का पानी बंद करने का आदेश दे दिया जाता है। क्या चोरी, जालसाजी पहले नहीं होती थी? समाज किस समय बुराइयों से पूर्ण मुक्त रहा है?

युवा पीढ़ी में जो बदलाव आया है उसके अनेक कारण हैं, और उसके लिए हम बुजुर्ग भी कुछ हद तक जिम्मेदार हैं। जिन पोशाकों में डिस्को के लिए हमारे बच्चे जाते हैं क्या घर की महिलाएँ–पुरुष इन बातों से अनभिज्ञ हैं? प्रारम्भ से ही जिन बच्चों को मां बाप के प्यार से वंचित रख कर (आया) धाई माँ के हवाले कर दिया गया हो उनसे हम क्या उम्मीद कर सकते हैं? पुरुष अपने व्यवसाय से समय नहीं निकाल पाते जिससे महिलाओं को अपने मनोरंजन के लिए, बच्चों को सुसंस्कारित करने की उपेक्षा कर धाई मां के हवाले कर, किटि पार्टी में जाना अधिक महत्वपूर्ण लगता है। बच्चों का स्वभाव तो कोमल होता है जैसा वे देखते हैं, सुनते हैं, बड़े होने पर वे इसी राह को अपना लेते हैं।

ऐसी अवस्था में हमें कविगुरू रविन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा "तुमार डाक सुने जोदि केऊ ना आसे, एकला चलो रे" (तुम्हारी आवाज सुन कर भी कोई तुम्हारे साथ नहीं आता तो तुम अकेले ही आगे बढ़ जाओ) की तर्ज पर आगे बढ़ना होगा। परिणाम निश्चित अच्छे होंगे। कुछ उदाहरण से मैं इन्हें सत्य सिद्ध करना चाहूँगा – पच्चीस वर्ष पूर्व "झुझुनूँ प्रगति संघ" की रजत जयंती समारोह में हमारे कुछ सदस्यों ने, महिलाओं ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वे मिलाई में करेंसी नोट के चार रुपये ही लेंगे और महिलाएं पैर छूने के पांच रुपये ही लेंगी। कुछ लोगों ने कहा वे विवाह में नकद रुपये नहीं लेंगे कुछ महिलाओं ने व्रत लिया कि वे सास की हैसियत से दहेज नहीं लेंगी। मैं जानता हूँ और मुझे यह कहते गर्व है कि वे अभी भी अपने वचन पर कायम हैं साथ ही उनके कई सम्बन्धियों ने भी उनसे यह शिक्षा ग्रहण की है। किसी भी अवसर पर फूल का गुलदस्ता भेजना आम बात हो गयी है। हजारों रुपये खर्च कर दिए जाते हैं। मैं सदा इसका विरोध अपने बच्चों के सामने करता था, उनसे मैं यह नहीं कहता कि वे अपनी शुभ कामनाएँ न भेजें, अपितु मैं उनसे यह कहता कि यदि वे स्वयं अधिक खर्च न करना चाहें तो अपने साथियों के साथ मिलकर कोई अच्छा उपहार ले आवें, और सभी की ओर से बधाई के साथ वह उपहार भेजें। कुछ समय तक तो बात उनकी समझ में नहीं आयी, किन्तु जल्द ही मेरे पुत्र को ही नहीं अपितु पौत्रों को भी समझ में आ गया कि फूल के गुलदस्तों पर हजारो का व्यय व्यर्थ है और उन्होंने अपनी अपनी मित्र मंडली में यह निश्चय किया कि भविष्य में कोई भी मित्र फूल गुलदस्ता आपस में नहीं भेजेंगे और एक साथ मिलकर शुभकामना सन्देश के साथ एक सुन्दर उपहार देंगे।

निश्चित ही फिजूल खर्च बढ़े हैं किन्तु यह कहना कि हमारे समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, हम नैतिक मूल्यों –आदर्शों से गिर रहे हैं, उचित नहीं लगता। आज हमारी युवा पीढ़ी की दक्षता, कार्य के प्रति समर्पण का भाव, एकाग्रता की भावना प्रशंसनीय है। जीवन के समस्त क्षेत्र – राजनीतिक, व्यवसायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि में उन्होंने दक्षता एवं दृढ़ता से कदम बढ़ाए हैं और भारत में ही नहीं विदेशों में भी ख्याति प्राप्त की है। आशा ही नही अपितु दृढ़ विश्वास है कि युवा पीढ़ी समाज के लिए दैदिप्यमान सूर्य प्रमाणित होंगे, आवश्यकता है केवल उन्हें सही दिशा प्रदान करने की।◆

कविताएँ:

तलाक का बढ़ता ग्राफ

- कु0 पूर्णिमा पाण्डा 'पूनम'

पति–पत्नी में जबरदस्त मतभेद
सामंजस्यता का अभाव
आपसी विश्वास की कमी
दहेज प्रथा का गतिशील प्रचलन
माँग के ऊपर माँग
बात–बात में कलह
झगड़े की स्थिति
परिणति सम्बन्ध विच्छेद
तलाक के बढ़ते ग्राफ में
आ सकती है कमी
समझदारी, वैचारिकता, जागरूकता से
जागिये, उठिये, चेतिये, विचारिये
घर से समाज
समाज से गाँव
गाँव से शहर
शहर से देश तक की
उन्नति का सफर
निश्चित तय होता है
अगर गृहस्थ दम्पत्ति
एक–मत हों, जागरूक हों
तलाक समाधान नहीं
बल्कि सामाजिक विसंगति है
दुर्भाग्य रूपी पतन को
आ बैल मुझे मार
जैसा मूर्खतापूर्ण आमंत्रण है।

शादी में कुछ नहीं चाहिये

- डॉ. गीता अग्रवाल

बरातियों की खातिर में कोई कमी न हो
पानी–पूड़ी, कचौड़ी रायता सभी हो
रसगुल्ला, रसभरी ईमरती गर्मागर्म हो
कुल्फी मलाई की धमा चौकड़ी हो
क्योंकि शादी में कुछ नहीं लेना है।

लड़के की शादी में परिवार में सभी के लिए
एक एक जोड़ा कपड़ा भी जरूरी है
लड़के की माता को बनारसी साड़ी
व पिता के लिए सूट के बिना क्या जंचता है
स्वयं लड़के के लिए चार सूट चाहिये
क्योंकि शादी में कुछ नहीं लेना है।

लड़की के जेवर तो माता पिता देते ही हैं
लड़के को ब्रेसलेट, अंगूठी हीरे की हो
लड़के की माता को माणिक पसंद है
बहना की पसन्द पोलकी सैट है
क्योंकि शादी में कुछ नहीं लेना है।

अवन माईक्रोवेव बिना क्या रसोई
तुम्हारी लड़की को परेशानी ना हो
इसके लिये वाशिंग मशीन है जरूरी
हो सके तो महाराजन हो एक अच्छी
जो तुम्हारी बेटी की पसन्द हो
क्योंकि शादी में कुछ नहीं लेना है।

वैसे मैं समाज सुधारक हूँ
दहेज का पक्का विरोधी हूँ
पर अपनी बेटी की परेशानी
देखना आपको समझाता हूँ
इसीलिए कहता हूँ
शादी में अपने लिए कुछ नहीं लेता हूँ

अग्रवाल कन्या चाहिए

गर्ग गोत्र, २८ वर्षीय (मांगलिक) उच्चता 5'-8" कोलकाता एवं बैंगलोर में निजी Manufacturing & Real estate व्यवसाय में कार्यरत स्वस्थ्य, दक्ष एवं सम्पन्न। Electronic Engineer, के लिए सुशील स्वजातीय कन्या चाहिए।

:: सम्पर्क सूत्र ::
Fax : 033-2335 0866
E-mail : montecmeter@hotmail.com

ADV

६६ सालों में सिर्फ सौ राजस्थानी फिल्में

कछुआ चाल वाली कहावत शायद इसी के लिए बनाई गई थी। क्षेत्रीय सिनेमा की दुनिया में राजस्थानी फिल्में आज बहुत ही सुस्त चाल में चल रही हैं और यह चाल भी ऐसी की १०० का आंकड़ा छूने में ६६ वर्ष लग गये। इस बढ़ती उम्र के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता कि हमारा सिनेमा अब परिपक्व हो गया है। साल–दर–साल बचकानी फिल्में और हर नई फिल्म के साथ दर्शकों की दम तोड़ती उम्मीदें। पहली राजस्थानी फिल्म 'नजराना' १९४२ में आई थी और अब २००८ में 'ओढ़ ली चुनरिया रे' सौवीं फिल्म के रूप में सैंसर सर्टिफिकेट हासिल किया है। हिन्दी, तमिल या तेलुगु में इनसे दुगुनी फिल्में तो एक साल में बन जाती है। इनमें कई फिल्में तो ऐसी होती है जो दुनिया भर में कामयाबी का परचम लहराती है। पर राजस्थानी में अगर जगमोहन मूंधड़ा की फिल्म 'बवंडर' को अलग कर दें तो ६६ साल में अंतर्राष्ट्रीय स्तर तो दूर, राष्ट्रीय स्तर की भी कोई फिल्म नहीं बन पाई है। भंवरी देवी प्रकरण २००१ में बनी फिल्म 'बवंडर' ने राजस्थानी सिनेमा को न सिर्फ पहली बार विदेशों तक पहुँचाया, बल्कि कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिबलों में चर्चा और अवार्ड हासिल कर राजस्थान का परचम फहराया है। अभी के इस दौर में भोजपुरी फिल्में देश–विदेशों में जो धुंआधार प्रदर्शन कर रही हैं, वो जगजाहिर है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि भोजपुरी सिनेमा ने यह बुलंदी अपने बलबूते हासिल की है, किसी सरकारी सहायता और टैक्स–फ्री की सुविधा के बगैर रविकिशन और मनोज तिवारी जैसे नये अभिनेताओं के जरिये, भोजपुरी भाषा बोलनेवाले दर्शकों के व्यापक समर्थन के दम पर।

भोजपुरी भाषा बोलने वालों की तरह राजस्थानी बोलने वाले इस देश और दुनिया भर में फैले हुए हैं। वे जहां भी रह रहे हैं, वहां वर्षों से अपनी जमीन, जड़ और जुबान से जुड़े हुए हैं। अपने घरों को संस्कारों से सजाकर रखते हैं तथा अपनी कला–संस्कृति से प्यार करते हैं। राजस्थानी में साफ–सुथरा, सुरुचिपूर्ण मनोरंजन देखने–सुनने को मिले, तो उसे भी उतने ही चाव से अपना सकते हैं। पर हिन्दी और दूसरे प्रादेशिक सिनेमा से राजस्थानी सिनेमा इतना पीछे और पिछड़ा है कि लगता है यह दौड़ से ही बाहर हो गया है। पर इच्छाशक्ति, चाह, लगाव और साहस हो तो दर्शकों का 'सपोर्ट पाकर, टीवी म्यूजिकल शो के प्रतियोगी की तरह फिर इस रेस में शामिल हो सकता है। राजस्थानी गीत–संगीत में रचे–बसे 'बीणा' के अलबमों को देश और दुनिया में जितनी लोकप्रियता मिली है, उससे ही यह बात साबित हो जाती है। राजस्थानी सिनेमा से जुड़े हुए फिल्मकारों को इस बात पर ईमानदार प्रयास करने की जरुरत है।

१९४२ से २००८ तक बनी हुई क्रमवार राजस्थानी फिल्में

१. नज़राना २. बाबासा री लाडली ३. नानीबाई कौ मायरौ ४. बाबा रामदेव पीर ५. बाबा रामदेव ६. धणी–लुगाई ७. ढोला–मरवण ८. गणगौर ९.गोपीचंद–भरथरी १०. गोगाजी पीर ११. लाज राखो राणी सती १२. सुपातर बीनणी १३. वीर तेजाजी १४. गणगौर १५. सती सुहागण १६. म्हारी प्यारी चनणा १७. सुहागण रौ सिणगार १८. पिया मिलण री आस १९. चोखौ लागै सासरियौ २०. राम–चनणा २१. सावण री तीज २२. देवराणी–जेठाणी २३. डूंगर रौ भेद २४. नणद–भौजाई २५. थारी म्हारी २६. जय बाबा रामदेव २७. धरम भाई २८. बिकाऊ टोरड़ौ/अच्छायौ जायौ गीगलौ २९. करमा बाई ३०. नानीबाई को मायरौ ३१. बाई चाली सासरिये ३२. ढोला–मारु ३३. रामायण ३४. जोग–संजोग/बाई रा भाग ३५. बाईसा रा जतन करो ३६. सतवादी राजा हरिश्चंद्र ३७. घर में राज लुगायां कौ ३८. रमकूड़ी–झमकूड़ी ३९. बेटी राजस्थान री ४०. चांदा थारै चांदणे ४१. मां म्हनै क्यूं परणाई ४२. बीनणी बोट देणनै ४३. माटी री आण ४४. सुहाग री आस ४५. दादोसा री लाडली ४६. वारी जाऊं बालाजीं ४७. भोमली ४८. भाई दूज ४९. बंधन वचनां रौ ५०. मां राखो लाज म्हारी ५१. जय करणी माता ५२. चूनड़ी ५३. लिछमी आई आंगणे ५४. बीनणी ५५. रामगढ़ की रामली ५६. खून रौ टीकौ ५७. जाटणी ५८. डिग्गीपुरी का राजा ५९. बीरा बेगौ आईजै रे ६०. गौरी ६१. बालम थारी चूनड़ी ६२. बेटी हुई पराई रे ६३. बाबा रामदेव ६४. दूध रौ करज ६५. बीनणी होवै तौ इसी ६६. बापूजी नै चायै बीनणी ६७. माता राणी भटियाणी ६८. राधू की लिछमी ६९. छम्मक छल्लो ७०. लाछा गूजरी ७१. जियो म्हारा लाल ७२. देव ७३. सरूप बाईसा ७४. जय नाकोड़ा भैरव ७५. सुहाग री मेहंदी ७६. छैल छबीली छोरी ७७. कोयलड़ी ७८. जय सालासर हनुमान ७९. गोरी रौ पल्लौ लटकै ८०. म्हारी मां संतोषी ८१. बवंडर ८२. मां राजस्थान री ८३. जय जीण माता ८४. मेंहदी रच्या हाथ ८५. चोखी आई बीनणी ८६. ओ जी रे दीवाना ८७. मां–बाप नै भूलजो मती ८८. खम्मा–खम्मा वीर तेजा ८९. लाडकी ९०. जय श्री आई माता ९१. लाडलौ ९२. पराई बेटी ९३. प्रीत न जाणै रीत ९४. मां थारी ओळू घणी आवै ९५. जय मां जोगणिया ९६. जय जगन्नाथ ९७. कन्हैयो ९८. म्हारा श्याम धणी दातार ९९. मां भटियाणीसा रौ रातीजोगौ १००. ओढ़ ली चुनरिया।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

१०० में से ६ फिल्में दूसरी भाषाओं से राजस्थानी में डब्ड। वीडियो फॉर्मेट में बनी हुई फिल्में शतक में शामिल नहीं है। साल भर में सबसे अधिक ७ फिल्में सन १९८५ में निर्मित। पहली लोकप्रिय और हिट फिल्म ***'बाबा री लाडली'*** (१९६१)। दूसरी पारी की पहली सुपर हिट फिल्म ***'सुपातर बीनणी'*** (१९८१)। ऑल टाईम हिट फिल्म ***'बाई चाली सासरिये'*** (१९८८) सबसे लम्बी अवधि की फिल्म ***'गौरी'*** (१९९३) : अवधि : ३ घंटा १२ मिनट। सबसे छोटी अवधि की फिल्म ***'लाज राखो राणी सती'*** (१९७३) अवधि : १ घंटा ५४ मिनट।•

कविताएँ :

राम जी का झूलन

सावन तो आ गयो साजन, झूला तो डारो आँगन।
हिल मिल के झूले सब, राम जी.....
भैया संग भाभी झूले मन न समाये फूले।
प्रेम की डोरी डोले, राम जी.....
बहिना संग जीजा झूले ऐसो प्रेम रस घोले।
झोटा ले होले होले, रामजी.....
लाली संग झूले लाला संग बालक के बाला।
नाचे गावें और झूमें, राम जी.....
भैया संग बापू आये, मन ही मन मुस्काये।
हिय में लेवे हिलोरे, राम जी.....
बाबा और दादी ताकें बैठे झरोखे झाँके।
अपनो यौवन टटोले, राम जी.....
ताऊ संग ताई झूले संग चाचा के चाची
मामा और मामी झूले संग नाना के नानी
फूफा संग झूले फूफी सबकी है प्रीत पुरानी।
नैन से नैन बोले, राम जी.....
मौसा संग मौसी झूले पास पड़ोसी झूले
उर में उमंग उठे तन में तरंग फूटे, राम जी.....
समधिन और समधी आये मन में थोड़ा शरमाये
खुल करके ऐसे झूले लाज का बंधन खोले, राम जी.....
पोती और पोता झूले तोती संग तोता बोले
गान की डार पर से मिठ्ठू स्वर से, राम जी.....
कलियन पे भंवरा मंडरे बगियन में झूलन फहरे।
प्रयेस संग प्रेयसी झूले धरती आकाश छूले, राम जी.....
बछिया बछड़ा भरे कुलांचे, नंदा नंदी खिलगयी बांछे
बंसीधर की बजी बांसुरी, आसक्त भयी शक्ति आसुरी
मधुर कंठी कोयल कूके, मोरन के हैं नृत्य अनूठे
चकवा, चकवी को चूमे पपिहा संग पपिही घूमे।
दादुर की टर्र टर्र चिड़ियन की फर्र फर्र
पशु पक्षी स्वच्छ विचर, राम जी.....
बृज के सारे नर नारी पहिर चोला और सारी
युवक युवतियां झूले, ब्याहे कुंआरी और कुँआरी
हृदय लेवे हिचकोले, राम जी
सखियन संग सखा झूले, संग राधा के श्याम
गोप गोपियन संग उपमा अनोखी, राम जी.....
सावन झूलन का खेलन पुरुष और प्रकृति लन
मंगला संग मंगल झूले सारे दुःख दर्द, राम जी.....

-श्री कृष्ण अग्रवाल 'मंगल' कोलकाता

गोविका

खुद से बाहर देख निकलकर
पार तुम करना भवसागर
दुख ने कभी न पीछा छोड़ा
देख लिया जग घूम–घूम कर
राजनीति के भँवरों में फँस
जन–जन का जीवन है दूभर
छल बल से वे जीत गये हैं
जीत गये तो बने सिकन्दर
जगत न बदला ना बदलेगा
जगत सन्यतन, ईश्वर का घर
जिसका आग उसे मिल जाये
उठे न कोई कहीं बवण्डर
जो लड़वाये, धर्म नहीं है
धर्म सभी के हित, श्रेयस्कर

दस रचनायें

(१)
अपार शक्ति
अचेतन में छिपी
जागृत नहीं

(२)
भाव–प्रवाह
कलक व कल्मल
समूल नष्ट

(३)
स्वप्न का सुख
यथार्थ सुख नहीं
दुःख – प्रतीक्षण

(४)
सेवी–संस्थायें
सेवा, राहत–कार्य
लोभ न मोह

(५)पत्रकारिता
जनता, सत्ताधारी
मध्य की कड़ी

(६)
पुराना ध्वस्त
नव नव निर्माण
अन्यथा नहीं

(७)
सुख से ऊँचा
संतोष व आनन्द
वस्तु में नहीं

(८)
जीवन पथ
सीधी लकीर नहीं
आड़ी तिरछी

(९)
एक अति से
दूसरी अति पर
भोग व त्याग

(१०)
पहले मौन
फिर प्रेम में डूबे
डूबते जायें।

- रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
डी४, उदय ह्यउसिंग सोसाइटी
बैजलपुर अहमदाबाद-३८००५१

मधुर राजमुरादाबादी

परिचयः

जन्म तिथि - १ फरवरी १९४१, शिक्षा - एम.ए. समाज शास्त्र (लखनऊ विश्व विद्यालय), वास्तविक नाम - मदन मोहन शुक्ल, साहित्यिक नाम - मधुर गंजमुरादाबादी, साहित्यिक सेवाएँ -१९६० से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, विधाएँ - बाल साहित्य, हास्य व्यंग्य, कविता, गीत, गजल, लघुकथा, संस्मरण आदि, प्रकाश्य - सात संकलन प्रकाश्य।

उजले सपने बहें

- मधुर राजमुरादाबादी

घुटन भरी चीखती हुई शामें
शोकगीत बाँचती हुई सुबहें,
ऐसे में क्या कहें?
दर्द की शिलाओं पर तिल–तिल कर मरना,
कदम–कदम पर बैठी ज़ालिम दुर्घटना।
दिशा–दिशा में खुलतीं,
अवसादों की तहें।
संस्मृति वन झुलसाता बारूदी झरना,
आँखों में अणुधर्मी धूल का उतरना।
कोमल पाटल कलियाँ,
विष का सिंचन सहें।
अधरों का बार–बार प्यास–प्यास रटना,
दोपहरी में बालू की रस्सी बटना।
तृष्णा के मरू में,
मृग छौने कैसे रहें?
थकन ऊब का ऊँचें कंधों पर चढ़ना,
आशंका वंश बेलि का अनुदिन बढ़ना।
पिछले अँधियारें में,
उजले सपने बहें।

- हितैषी स्मारक सेवा समिति
गंजमुरादाबाद-उन्नाव, उ0प्र0-४१५१०२

मैं नेता हूँ !

मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ,
मैं राजनीति की वह मैली चादर हूँ
जिसके नीचे सब कुछ छिप जाए,
मैं आसमान का वह धुंधला बादल हूँ,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
मैं नेता हूँ, मैं अभिनेता भी हूँ
और सांसद, विधायक भी मैं हूँ,
मैं पार्षद हूँ और हूँ, राज्यपाल
कभी राजभवन तो कभी द्वारपाल,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
मेरा जीवन लक्ष्यहीन, मेरा जीवन प्राण हीन,
मैं तो मात्र नेतृत्व का भूखा हूँ,
मैं देश सेवा के लिए ही सूखा हूँ,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
मैं ग्रामस्वराज्य की बात हूँ करता
मैं लोकराज्य की बात हूँ करता,
ये बातें जनमानस से मैं तबतक करता रहता
जबतक आयोग चुनाव की घोषणा नहीं करता,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
चुनाव घोषित होते ही, मैं शीर्षस्थ नेता हो कर
आश्वासन देता हूँ, क्या ?
पुल बनवाऊँगा, रेल चलवाऊँगा,
इस क्षेत्र में सड़क बनवाकर उस पर बिजली लगवाऊँगा
बाढ़ और सूखा पर नियंत्रण रखूंगा,
बांध और वर्षा खुद बनजाऊँगा,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
सांसद बनकर मैं नहर और कृत्रिम वर्षा करवाऊँगा
मंत्री बन गया तो हमारे क्षेत्र में एक भी भूखा नहीं मरेगा,
मेरे रहते यह क्षेत्र कभी भी सूखा नहीं रहेगा
बाढ़ में एक इंच भी भूमि नहीं कटेगी,
प्रधानमंत्री बन गया तो, देश की गरीबी मिटेगी,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
मैं हूँ साहित्यकार और हूँ वैज्ञानिक
मैं अर्थशास्त्री भी हूँ और हूँ सर्वज्ञानिक
मेरा ज्ञान अपरिमित है,
हर मंत्रालय के लिए मैं सक्षम हूँ,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ.....।
देश विदेश का है ज्ञान मुझे
साले बहनोई का है ध्यान मुझे,
ऐसे नेता को यदि वोट न मिले
तो देश का दुर्भाग्य है,
पद मिल जाए तो मेरा सौभाग्य है,
मैं देश का एक अप्रतिम नेता हूँ,
मैं खद्दर हूँ, मैं खादर हूँ,
मैं राजनीति की वह मैली चादर हूँ
जिसके नीचे सब कुछ छिप जाए,
मैं आसमान का वह धुंधला बादल हूँ,

- डॉ. मंगलाप्रसाद
२९१/१, अशोकगढ़ (पश्चिम)
कोलकाता-७०० १०८

बुफे डिनर

(जूठा खाना, जूता पहनकर खाना, चलते चलते खाना, बिना पानी लिये हुए खाना, आदि बातें भारतीय परम्परा तथा शास्त्रीय मर्यादा के विरुद्ध हैं एवं अस्वास्थ्यकर हैं। यह प्रथा हमारे देश में पश्चिम की असभ्यता का अन्धानुकरण है। इसका चित्रण मारवाड़ी भाषा में देखिये):—

पग मं जूता, प्लेट हाथ मं खड़्या डोलता खाव।
भिखमंगा सा लग लाइन मं एक एक चीज उठाव।।
घणी बानगी, प्लेट है छोटी, याम किस बिध माव।
मीठो, फोको साग रायतो एकमेक हो जाव।।
लग बीच मं प्यास तो बंदो तीस्यो हो रह जाव।
भलो मीनख नहीं लेय दुबारा, आधो भूखो आव।।
घर मं करी रसोई कोनी दोनू दीन स जाव।
मन मसोस कर घर मं आकर भूखो ही सो जाव।।
ज निसर्मो बण कर लेव, जूठो कूठो पाव।
बूफे डिनर मं खाण स्यूं धर्म भ्रष्ट हो जाव।।
लाखां रुपया ब्याह मं लाग, ख्वातां जी दुःख पाव।
पातल क मिस मार पलाखी, आप बैठकर खाव।।
नुतो देकर भूखा राख, झूठी शान दिखाव।
नहीं समाई थी ख्वाण की, तो क्यूं ढोंग रचाव।।
जीमण और जीमाण को, आनन्द जणा ही आव।
परम प्रेम स आसण देकर, कर मनुहार जीमाव।।
बूफे मं नहीं खातरदारी, नहीं कोई पूछण आव।
धूल जीमणों और जीमाणों, क्यूं निज धरम गमाव।।
बूफे मं नहीं वेस्टेज होव या दलील व देव।
पूरो सो व ख्वाव ही कोनी, वेस्टेज किस विध होव।।
भंगी, कुत्ते और कागलो, तीन ही जूठो खाव।
कुंअँ भंग पड़ गई देखो, कुण किन्नः समझाव।।
पग मं जूता प्लेट हाथ म खड़्या डोलता खाव।
भिखमंगा सा लग लाईन म, एक एक चीज उठाव।।

- रचयिता - राधेश्याम पोद्दार
P-180, C. I. T. Road, Scheme VI M
Kankurgachi, Kolkata - 700 054
Mobile : 9831475891

मूर्खः मूर्खः

एक बार राजा भोज दिन में ही किसी कार्यवश अपने अन्दर महल में चले गए। रानी किसी अन्य महिला के साथ वार्तालाप कर रही थी। राजा भोज को उपस्थित होते देखकर तथा वार्तालाप में व्यवधान डालने के कारण उन्हें मूर्ख कह बैठी। राजा भोज के आत्मसम्मान में आघात लगा तथा विक्षिप्त सा हो गये। वापस दरबार में आकर सभी आने वालों को मूर्खः—मूर्खः कहने लगे। उसी समय महान् विद्वान कालीदास दरबार में प्रवेश किए। उनको देखते हुए राजा भोज ने मूर्खः मूर्खः शब्द से सम्बोधित किया। कालीदास को आश्चर्य हुआ। आखिर राजा भोज यह जानते हुए कि मैं विद्वान हूँ फिर भी ऐसा किस कारण से कहा? उन्होंने एक श्लोक पढ़ा—

गतं न सोचामिः कृतं न मन्यो
चलन न खादन हसन न जल्पे।
द्वितीया कदापि भवामि न तृतीयों,
कथं भोजः भवामि मूर्खः।।

अर्थात कालीदास की भी मान्यता है कि चलन न खादन'' चलते हुए भोजन करना मूर्खता है।

राजा भोज को भी एहसास हो गया कि रानी ने उन्हें वार्तालाप में व्यवधान डालने के कारण मूर्खः कहा, जो उचित था।

क्या कहें ?

- डॉ. मोहन 'आनन्द'

शून्य हो गई हैं सभी संवेदनाएँ,
आदमी का खून पानी हो गया है, क्या कहें ?
सांस लेना हो गया है आज कल दूभर,
जुल्म इन आतंकियों का, तुम कहो कब तक सहें ?
इस विषम हालात से, कैसे कहो हम जीत पाएँ ।
किस तरह इस चमन में, खुशियों की फसलों को उगाएँ ।
आदमी अब हो गया है शिकारी ।
खीस, नख तीखें गरल से सने हैं ।
अब नहीं कोई किसी का है सगा ।
सिर्फ रिश्ते स्वार्थ से गूंथे सने हैं ।
सब व्यथा से ग्रसित हैं, किसको कहो कैसे बताएँ ।
किस तरह इस चमन में, खुशियों की फसलों को उगाएँ ।
मूल्य न समझें लहू का सिरसिरे ये नख़ीजन ।
ख़ौफ़ में मजबूर हैं, जीने को जीवन आमजन ।
ये नहीं पहचान पाते, मरने वाले कौन हैं ।
समझ में आता नहीं क्यों, जिम्मेदारी मौन है ।
आइए हम एक जुट हो, सबक दुष्टों को सिखाएँ ।
किस तरह इस चमन में खुशियों की फसलों को उगाएँ ।

-सुन्दरम बंगला
५०, महाबली नगर, कोलार रोड,
भोपाल-४६२०४२, फोन-०७५५-२४९३८७९,
मोब. ०९८२७२,४४३२७, ९४२५६०९५७८

मातृभाषा की मान्यता से होगा संस्कृति का संरक्षण

- डॉ. राजेश कुमार व्यास

ओबामा सरकार की कार्यकारी शाखा के लिये जारी नौकरियों के आवेदन के लिए दुनियाभर की जिन १०१ भाषाओं को चुना गया है, उनमें २० क्षेत्रीय भाषाओं की जानकारी रखने वालों को आवेदन हेतु पात्र माना गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन २० क्षेत्रीय भाषाओं में मारवाड़ी का स्थान भी है। भले ही भारतीय संविधान की ८ वीं अनुसूची में सम्मिलित २२ भाषाओं में राजस्थानी का स्थान नहीं है परन्तु विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र ने राजस्थानी को मान्यता देकर यह साबित कर दिया है कि राजस्थानी विश्व की किसी भी अन्य भाषा से कमतर नहीं है। राजस्थानी के साथ यह विडम्बना ही है कि बोलियों की राजनीति में अभी भी यह राज–काज की भाषा के रूप में संविधान की आठवी अनुसूची में स्थान नहीं पा सकी है, बावजूद इसके कि इसका समृद्ध प्राचीन साहित्य है, समृद्ध शब्द कोश है और सबसे बड़ी बात व्यापक स्तर पर इसकी मान्यता के लिए समय–समय पर भाषाविदों ने भी एकमत राय व्यक्त की है।

जो लोग राजस्थानी की मान्यता के विरोधी हैं, उन्हें इस बात को समझ लेना चाहिए कि राजस्थानी की मान्यता से किसी और भाषा का अहित नहीं होने वाला है और जो लोग बोलियों के नाम पर राजस्थानी की मान्यता पर प्रश्न उठाते हैं, उन्हें भी भाषाविदों की इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी भाषा की जितनी अधिक बोलियां होती हैं, वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध मानी जाती है। राजस्थानी के साथ यही है।

याद पड़ता है, इन पंक्तियों के लेखक ने कमलेश्वर पर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की पत्रिका 'जागती जोत' में एक संस्मरण वर्ष २००० में लिखा था। संस्मरण कमलेश्वर को पढ़ने के लिए भेजा गया। संस्मरण पढ़ने के बाद इन पंक्तियों के लेखक को कमलेश्वर ने जो पत्र लिखा, उनकी पंक्तियां देखें, 'कृपणता हूं तो राजस्थानी समझ में आती है। आखिर हिन्दी को अपना रक्त संस्कार राजस्थानी, शौरसेनी और ब्रज ने ही दिया है। अपनी मातृभाषाओं के विसर्जन से हिंदी प्रगाढ़ और शक्तिशाली नहीं होगी, हमें अपनी मातृभाषाओं को जीवित रखना पड़ेगा, जहां से हिंदी की शब्द सम्पदा संपन्न होगी। यह बिटिया बेटे को ब्याहने वाला रिश्ता है–जो नाती–पोतों में हमें अपनी निरंतरता देता है।'

कमलेश्वर ही क्यों विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगौर ने भी राजस्थानी के दोहे सुनकर कभी कहा था, ''रवीन्द्र गीतांजली लिख सकता है, डिंगल जैसे दोहे नहीं।' भाषाशास्त्री सुनीति कुमार चटर्जी, आशुतोष मुखर्जी राजस्थानी भाषा के समृद्ध कोश और इसकी शानदार परम्परा के कायल होते हुए समय–समय पर राजस्थानी की मान्यता की हिमायत करते रहे हैं। यही नहीं भाषाओ के विकास क्रम के अंतर्गत राजस्थानी का प्रार्दुभाव अपभ्रंश में, अपभ्रंश की उत्पत्ति प्राकृत तथा प्राकृत का प्रारंभ संस्कृत और वैदिक संस्कृत की कोख में परिलक्षित होता है। इन सबके बावजूद राजस्थानी को मान्यता नहीं मिलना क्या समय की भारी विडंबना नहीं है?

यहां यह बात गौरतलब है कि आरंभ में संविधान की आठवी अनुसूची में जिन १४ भाषाओं का उल्लेख किया गया, उनका स्पष्टत: कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था परन्तु राजस्थानी की मान्यता का तो आरंभ से ही वैज्ञानिक आधार रहा है। इसे बोलने वालों की संख्या के साथ ही भाषा की क्षमता और साहित्य की समृद्धि को ही यदि आधार माना जाए कि राजस्थानी प्रारंभ में ही संविधान की आठवी अनुसूची में सम्मिलित हो जानी चाहिए थी। ऐसा भी नहीं है कि राजस्थानी की मान्यता के लिए प्रयास नहीं हो रहे हैं। राजस्थान विधानसभा में वर्ष १९५६ से ही राजस्थानी को राज–काज और शिक्षा की भाषा के रूप में मान्यता के प्रयास हो रहे हैं परन्तु इन प्रयासों को अमलीजामा पहनाने की दिशा में कोई समर्थ स्वर नहीं होने के कारण यह भाषा राजनीति की निरंतर शिकार होती रही है। राज्य विधानसभा में पहली बार १६ मई १९५६ को विधायक शम्भुसिंह सहाड़ा ने राजस्थानी भाषा प्रोत्साहन के लिए जो अशासकीय संकल्प रखा उसमें राजस्थान की पाठशालाओं में राजस्थानी भाषा और तत्संबंधी बोलियों की शिक्षा देने पर जोर देने हेतु तगड़ा तर्क दिया गया था। संकल्प में कहा गया था कि बच्चे घरों में अपने माता–पिता के साथ जिस भाषा में बात करते हैं, उसी में शिक्षा दी जानी चाहिए, इसी से वे पाठ्यपुस्तकों में वर्णित बातों को प्रभावी रूप में ग्रहण कर पाएंगे।

तब से आज ५३ वर्ष हो गए हैं, राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए अब भी यही तर्क है। मैं तो बल्कि यह भी मानता हूं कि शिक्षा क्षेत्र में राजस्थान का तेजी से विकास नहीं होने का प्रमुख कारण भी यही है कि यहां की भाषा व्यवहार और शिक्षा की भाषा नहीं बन पायी। यह कितनी विडम्बना की बात है कि लगभग १ हजार ई. से १ हजार ५०० ई. के समय के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर जिस भाषा के बारे में गुजराती भाषा एवं साहित्य के मर्मज्ञ स्व. झवेरचन्द मेघाणी ने यह लिखा कि व्यापक बोलचाल की भाषा राजस्थानी है और इसी की पुत्रियां फिर ब्रजभाषा, गुजराती और आधुनिक राजस्थानी का नाम धारण कर स्वतंत्र भाषाएं बनी। उस भाषा की संवैधानिक स्वीकृति के बारे में निरंतर प्रश्न उठाए जा रहे हैं।

एक प्रश्न यह हो सकता है कि संविधान की मान्यता के

बगैर क्या कोई भाषा अपना अस्तित्व बनाकर नहीं रह सकती। यह सच है कि भाषा सरकारें नहीं बनती, वे लोग बनाते हैं जो इसका प्रयोग करते हैं परन्तु इसका व्यवहार में प्रयोग तो तब होगा न जब यह शिक्षा का माध्यम बनेगी, जब राजकाज, विधानसभाओं, अदालतों में इस भाषा का प्रयोग उचित समझा जाएगा। और यह सब तब होगा जब सरकार इसे मान्यता प्रदान करेगी। अभी तो स्थिति यह है कि राजस्थानी भाषा को यदि विधानसभा, अदालत या अन्य किसी राज के काज में उपयोग में लियां जाता है तो पहले उसकी वैधानिकता को ढूंढा जाता है। घर में राजस्थानी भाषा बोलने वाले बाहर हिन्दी या अंग्रेजी भाषा के उपयोग के लिए मजबूर हैं, ऐसे में बहुत से शब्द धीरे–धीरे प्रयोग में आने बंद हो रहे हैं। इन पंक्तियों के लेखक जैसे बहुत से हैं जिनका आरंभिक परिवेश राजस्थानी का रहा है, आज भी पति–पत्नि हम राजस्थानी में बात करते हैं परन्तु बच्चों से हिन्दी में बात करने के लिए मजबूर हैं। कारण यह है कि वे ठीक से विद्यालय में हिन्दी यदि नहीं बोल पाएंगे तो जिस भाषा में वे शिक्षा ले रहे हैं, उन्हें बोलने वाले दूसरे बच्चों के साथ उन्हें हिन भावना जो महसूस होगी। राजस्थान में ही गांवों, छोटे शहरों से राजधानियाँ और बड़े शहरों में आए अधिकाशं राजस्थानी बोलने वालों के साथ यही हो रहा है। उन्हें अपनी भाषा से लगाव है, प्यार है परन्तु इस बात की लगातार गम भी है कि उनके बाद इस भाषा को उनके बच्चे नहीं बोलेंगे, व्यवहार में नहीं लेंगे। क्या ऐसा तब संभव होता जब उन बच्चों को भी राजस्थानी में ही पढ़ने का मौका मिलता?

भाषा निरंतर प्रयोग से समृद्ध होती है परन्तु राजस्थानी का यह दुर्भाग्य है कि प्रतिवर्ष गांवों, सुदूर ढ़ाणियों से अपनी मेहनत से पढ़–लिखकर शहर में आकर नौकरी करने वाले राजस्थानी भाषी मजबूरन अपनी दूसरी पीढ़ी के साथ राजस्थानी में संवाद नहीं कर पाते हैं, ऐसे दौर में कब तक राजस्थानी गांवो के अलावा शहरों में बची रहेगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। राजस्थानी की मान्यता को क्यों इस नजरिए से नहीं देखा जा रहा? क्यों राजस्थानी भाषा के बाद जो भाषाएं विकसित हुई उन्हें मान्यता मिल गयी परन्तु राजस्थानी आज भी मान्यता की बाट जो रही है? क्यों बोलियों के नाम पर राजस्थानी के साथ यह अन्याय हो रहा है? हकीकत यह है कि राजस्थानी की मान्यता इसके अधिकाधिक लोक प्रयोग के लिए जरूरी है, इसलिए भी कि इसी से मुद्रण और प्रकाशन, पठन–पाठन और बोलने की आदत का इसका अधिक विकास होगा और यही इस भाषा की आज की जरूरत है। इसी से राजस्थानी के समृद्ध प्राचीन साहित्य को भी बचाया जा सकेगा।

बहरहाल, भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य में ही राजस्थानी की मान्यता को देंखे। संविधान की मूल अवधारणा लोकतांत्रिक प्रस्थापना में है। संविधान में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि अगर एक हिस्से की भाषा कोई है तो उसको बचाया जाए। राजस्थानी ९ करोड़ लोगों की भाषा है, इसे बचाना, इसकी मान्यता, संरक्षण इसलिए जरूरी है। राज्य विधानसभा में वर्तमान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के मुख्यमंत्रीत्व काल में ही वर्ष २००३ में राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनूसूची में सम्मिलित करने का संकल्प बगैर किसी बहस के ध्वनि मत से जब पारित किया जा चुका है तो फिर केन्द्र सरकार के स्तर पर इस पर अब कोई प्रश्न ही नहीं रहना चाहिए।

अभी कुछ समय पहले ही एक पुस्तक प्रदर्शनी में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा वर्ष १९५९ में जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन की प्रकाशित 'भारत का भाषा सर्वेक्षण' पुस्तक मैं खरीदकर लाया। उत्सुकतावश राजस्थानी के बारे में इसमें कुछ लिखा होने के लिए जब पन्ने खोलें तो पढ़कर बेहद अचरज हुआ। ग्रियर्सन ने इसमें राजस्थान की भाषा राजस्थानी बताते हुए स्पष्ट कहा है–"मारवाड़ी के रूप में, राजस्थानी का व्यवहार समस्त भारतवर्ष में पाया जाता है।" इसी में एक स्थान पर राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियों पर विस्तार से लिखते हुए स्पष्ट कहा है–"पंजाबी के ठीक दक्षिण में लगभग १ करोड़ साढ़े बयासी लाख राजस्थानी भाषा–भाषियों का क्षेत्र है जो इंगलैण्ड तथा वेल्स की आधी जनसंख्या के बराबर है। जिस प्रकार पंजाबी उत्तर–पश्चिम में मध्य देश की प्रसारित भाषा का प्रतिनिधित्व करती है, उसी प्रकार राजस्थानी उसके दक्षिण–पश्चिम में प्रसारित भाषा का प्रतिनिधित्व करती है।"

ग्रियर्सन ने भाषा सर्वेक्षण का यह कार्य तब किया था जब भारतीय संविधान बना भी नहीं था, बाद में अंग्रेजी से यह पुस्तक हिन्दी में अनुवादित होकर प्रकाशित हुई। सोचिए जिस भाषा को सर्वेक्षण में राजस्थानियों का प्रतिनिधित्व की भाषा कहा गया, क्या वह संविधान की आठवी अनुसूची में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने योग्य नहीं है? वर्ष १९६७ से लेकर अब तक बहुत सारी भाषाएं संविधान की ८ वीं अनुसूची में जोड़ी गयी है। यह सच में विडम्बना की बात है कि जिस भाषा की लिपि से आधुनिक देवनागरी और दूसरी अन्य भाषाओं की लिपियां बनी है और जिसका अपना व्याकरण और विश्व के विशालतम शब्दकोशों में से एक जिसका शब्दकोश है, ऐसी भाषा को संविधान की ८ वीं अनुसूची में जुड़ने का अभी भी इन्तजार है।

राजस्थानी की मान्यता में किसी का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है। इसका अर्थ इतना ही है कि इससे वर्षो पुरानी इस भाषा का संरक्षण हो सकेगा। ऐसे दौर में जब मातृभाषाओं पर विश्वभर में संकट चल रहा है, इस दिशा में गंभीर चिंतन कर त्वरित कार्यवाही की जानी समय की आवश्यकता भी है। इसलिए भी कि भाषा, साहित्य और संस्कृति से व्यक्ति अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है। राज की मान्यता भाषा के प्रयोग को व्यापक स्तर पर प्रयोग की स्वीकृति देती है। इसी से फिर स्थान विशेष की संस्कृति का भी अपने आप ही संरक्षण होता है। क्यों नहीं राजस्थान की संस्कृति के संरक्षण की सोच के साथ भाषा की मान्यता पर सरकार चिंतन करे।

– डॉ. राजेश कुमार व्यास
III/३९ए गाँधीनगर, न्याय पथ,
जयपुर– ३०२ ०१५ (राजस्थान)
e-mail : dr.rajeshvyas5@gmail.com

डॉ पूर्णिमा केडिया

को राधाकृष्ण सम्मान

रांची : हिंदी में उत्कृष्ट लेखन के लिए राजधानी की डॉ पूर्णिमा केडिया को आज २८वां राधाकृष्ण सम्मान से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि मैं धन्य हूं, ईश्वर ने जीवन के रंगभूमि पर उतारने से पहले मुझे कलम थमा दी। पुरस्कार पाकर लगा कि थोड़ा–बहुत मैंने जो कुछ लिखा है, वह सार्थक है। जीवन के रंगमंच पर अपनी भूमिका के मूल्यांकन का साहस मुझमें नहीं है। साहित्य की सेवा करना धर्म समझ रही हूं। डॉ केडिया ने कहा कि महान साहित्कार राधाकृष्ण हमेशा से प्रेरणा स्त्रोत और मार्गदर्शक रहे हैं। इनकी कृतियों का संग्रह किया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि डॉ केडिया ने तीन उपन्यास और चर्चित लघु कहानियां लिखीं हैं। पुरस्कार समारोह में वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकर्मी, व्यंगकार और छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी के संचालक रमेश नैयर ने कहा कि आज का मीडिया गुदगुदाता है। श्रृंगार की सामग्री बताता है। अच्छे भोजन की रेसेपी बताता है। मीडिया शोध भी करता है, लेकिन साथ ही एक ऐसा घेरा भी बनाता है, जहां विचारों की कोई जगह नहीं है। वह एक ऐसे समाज की रचना में लगा है, जहां बाहरी सुख की कामना में लोग लगातार भटक रहे हैं। समाज हँस रहा है, लेकिन अंदर गहरी पीडा है, शोक है। विचारों की जगह अब बाजार और स्पर्धा ने ले ली है। तत्कालीकता से पत्रकारिता चल सकती है, इससे समाज नहीं बन सकता, लेकिन जब घटनाक्रम के साथ विचारों को जगह मिलती है, तो साहित्य बनता है। मीडिया को सजग होकर अच्छे विचारों से मुकम्मल समाज गढ़ना होगा। राष्ट्र की संकल्प शांति के साथ मीडिया भी चले। समाज को परिष्कृत करने वाले विचार लेकर आये। साहित्य के साथ रिश्ते मजबूत करें। आज की पत्रकारिता साहित्य से विमुख हुई है। एक समय था, जब साहित्य पत्रकारिता का मार्गदर्शक था। उन्होंने कहा कि नयी पीढ़ी के पत्रकारों के सामने चुनौतियां हैं। हम रोज–रोज जो लिखते हैं वह न तो इतिहास है और न ही दर्शन। यह क्षरणशील है। जल्दबाजी का साहित्य है। इसमें जब परिपक्वता आती है, तो साहित्य बनता है। उन्होंने कहा कि झारखंड–बिहार की पत्रकारिता से उम्मीद है। यहां के अखबारों में विचार नहीं मरा है। चयन समिति के अशोक प्रियदर्शी ने साहित्यकार डॉ केडिया की लेखन क्षमता और साहित्य में उनके योगदान को विस्तार से बताया। वरिष्ठ पत्रकार बलबीर दत्त ने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य और पत्रकारिता के प्रति सरकार के उदासीन रवैये की ओर लोगों का ध्यान दिलाया। पूर्व सांसद अजय मारू ने स्वागत और भुनेश्वर अनुज ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर शहर के प्रमुख साहित्कार, लेखक, पत्रकार और रांची विश्वविद्यालय पत्रकारिता विभाग के छात्र–छात्राएं मौजूद थीं।•

-१०५, फिकॉन पैलेस, जे. सी. रोड, लालपुर, राँची-८३४००१
(झारखण्ड) फोन : ०९४३१३६१८३९, ०६५१२५६०६८३

नये आजीवन सदस्य

नाम : *परमानन्द हरलालका*
कार्यालय का पता :
श्री श्याम इण्टर प्राइजेज,
५५ श्रीजी मार्केट,
नीयर : मेघदूत होटल के पास
सारंगपुर, अहमदाबाद–२.
मोबाइल नं.–०९३७७९१२६३०
०९३३९३५५४६०

प्रस्तावक : संयज हरलालका अनुमोदक : ओमप्रकाश पोद्दार

नये विशिष्ट सदस्य

नाम : *सचिन शर्मा*
कार्यालय का पता :
सागर दूत,
११७, कॉटन स्ट्रीट,
कोलकाता – ७,
मोबाइल नं.–९३३१०८३८४१

प्रस्तावक : राम अवतार पोद्दार अनुमोदक : संजय हरलालका

कवि हृदय - महाप्रज्ञ

मैं गाड़ी में जुते बैलों को
देखकर सोचता हूँ
आदमी सोचता क्यों है ?
यह गाड़ी इसीलिए
ठीक चल रही है
कि बैल सोचते नहीं हैं।
बैल अपने साथ किए गए
व्यवहारों के प्रति सोचते तो गाड़ी
एक दिन भी नहीं चल पाती
फिर चलती
हड़ताल
बंद और घेराव।
समस्या के समाधान का
सर्वश्रेष्ठ उपाय यही है
समस्या की श्रृंखला में
एक नई समस्या
जोड़ दो
पुरानी समस्या से हटा
जनता का ध्यान
उस ओर मोड़ दो।
जो यथार्थ का प्रतिबिंब दे
उस शीशे को
फोड़ दो।

साभार : मारवाड़ी डाइजेस्ट मासिक

साहित्य-संगीत को साथ लेकर चलने की जरुरत : पं. जसराज

गाकर जी लेता हूँ : पं. जसराज

संगीत मार्तण्ड पद्मविभूषण पंडित जसराज प्रमोद शाह द्वारा तीन खंडों में परिकल्पित, संकलित एवं संपादित पुस्तक 'थॉट्स ऑन रिलीजियस पॉलिटिक्स इन इंडिया' (१८५७-२००८) का लोकार्पण करते हुए। साथ में हैं डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, प्रभात खबर के प्रधान संपादक हरिवंश, श्री हरि कृष्ण चौधरी और एकदम बायें प्रमोद शाह।

कोलकाता : भारत को साहित्य व संगीत को साथ लेकर चलने की जरुरत है, इसी से मनुष्यता और सद्भाव बचेगा। मुझे कुछ लिखना–पढ़ना नहीं आता। जो कुछ है, उसे गाकर जी लेता हूँ। ये बातें संगीत मार्तण्ड पद्मविभूषण पंडित जसराज ने प्रमोद शाह द्वारा तीन खंडों में परिकल्पित, संकलित एवं संपादित पुस्तक ***'थॉट्स ऑन रिलीजियस पॉलिटिक्स इन इंडिया'*** (१८५७–२००८) का लोकार्पण करते हुए कही। समारोह की अध्यक्षता डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र ने की। समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रभात खबर के प्रधान संपादक हरिवंश ने भी अपने विचार रखे।

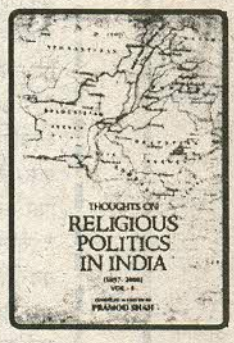

भारतीय भाषा परिषद में आयोजित लोकार्पण समारोह में पंडित जसराज ने कहा, 'मैं एक समारोह में गा रहा था तो पीछे से किसी ने फरमाया, अल्लाह हो मेहरबान। इसे सुन कर मैं क्षण भर के लिए खो गया इसके बारे में जब मैंने अपनी बेटी को फोन किया, तो उसने बताया कि भगवान ने आपको एक विशेष काम के लिए धरती पर भेजा है। अपना विचार प्रस्तुत करने के बाद पंडित जसराज ने 'चिदानन्द शिवोहम, अल्लाह हो मेहरबान' और शिवशंकर महादेव गाकर श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। हर–हर महादेव कहते हुए उन्होंने प्रमोद शाह को आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा, मेरे मुंह से अभी हर–हर महादेव का स्वर निकला है। इसलिए आपकी यह किताब दुनिया को बहुत पसंद आयेगी।' मौके पर प्रभात खबर के प्रधान संपादक हरिवंश ने कहा कि सांप्रदायिकता धार्मिक नहीं राजनीतिक प्रतिक्रिया है। इतिहास के गड़े मुर्दे को उखाड़ने से देश शक्तिशाली नहीं होगा। जो भारत को गढ़ना और बनाना चाहते हैं, उन्हें भाषा, धर्म, जाति और समुदाय से ऊपर उठ कर सद्भाव बनाने की पहल करनी चाहिए। समारोह की अध्यक्षता मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र ने की। उन्होंने कहा कि साहित्य, संगीत व अध्यात्म का स्वर राजनीति छोड़ दे, तो वह लंगड़ी हो जायेगी। रामकृष्ण परमहंस व महात्मा गांधी से बड़ा धर्मनिरपेक्ष कौन हो सकता है? गांधी और गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे लोगों ने समझाया कि सभी मनुष्य एक हैं। गांधी जी ने सचेत करते हुए कहा था कि आज हमारा देश अधार्मिक हो रहा है। लोकार्पित पुस्तक के बारे में डॉ. मिश्र ने कहा कि यह पुस्तक नई पीढ़ी के लिए प्रेरक और हमारी पीढ़ी के लिए गौरव की बात है। समारोह में पंडित जसराज की उपस्थिति ने समारोह में प्राण प्रतिष्ठा कर दी है। प्रमोद शाह ने पुस्तक को संपादित करने में जो अनुभव और संघर्ष झेला, उसे सुनाया और कहा कि धर्म अलग है। धर्म के नाम पर राजनीति अलग है। धर्म को संस्कृति में रखने पर देश सुधरता है और राजनीति में रखने पर विकृत होता है। धार्मिक मतभेदों को भुला कर हमें देश को खुशहाल करने की कोशिश करनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन नंदलाल शाह व स्वागत भाषण संयोजक महेश चन्द्र शाह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ.शशि शेखर शाह ने किया। सोसायटी फॉर नेशनल अवेयरनेस के अध्यक्ष व प्रकाशक हरि कृष्ण चौधरी ने कहा कि आनेवाली पीढ़ी के लिए यह पुस्तक प्रेरणादायक साबित होगी। कार्यक्रम के शुरुआत में श्रीमती अनुराधा खेतान ने तीनों पुस्तकों का ऑडिओ–वीडियो चित्रण दिया।•

युगपथ चरण:

निःशुल्क विशाल मधुमेह मेला

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, शाखा कानपुर एवं कानपुर डायबिटीज एसोसियेशन द्वारा रविवार दिनांक २१ दिसम्बर २००८ को निःशुल्क विशाल मधुमेह मेला का आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ अनुभवी मधुमेह चिकित्सों द्वारा करीब ३०० रोगियों की निःशुल्क जाँच की गयी तथा मधुमेह रोग के बारे में करीब ८०० लोगों ने मधुमेह विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान सुना जिसमें मधुमेह रोग सम्बन्धित सभी शंकाओं का निवारण किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि प्रमुख समाजसेवी एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ माननीय श्री विमल झाझरिया थे। कार्यक्रम में अध्यक्ष सुशील तुलस्यान, उपाध्यक्ष सत्येन्द्र महेश्वरी, महेश भगत, महामंत्री महेशचन्द्र शर्मा, मंत्री संजीव झुनझुनवाला, संयुक्त मंत्री आलोक कानोडिया, संजय अग्रवाल, सत्यनारायण सिंहानिया, सुनील मुरारका, बलदेवप्रसाद जाखोदिया, सत्यनारायण नेवटिया, कमलेश केडिया ने भागीदारी की। कार्यक्रम का संचालन संयोजक जय डालमिया तथा धन्यवाद श्रीगोपाल तुलस्यान ने किया।

- महेशचन्द्र शर्मा, महामंत्री

स्थापना दिवस
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

'बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन' के स्थापना दिवस के अवसर पर गत ३० दिसम्बर को रक्सौल शाखा द्वारा स्थानीय 'श्री सत्यनारायण मारवाड़ी पंचायती मंदिर एवं विवाह भवन' के प्रांगण में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ सुन्दरकाण्ड के सस्वर पाठ एवं भजन से हुआ। इसके पश्चात् विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिनमें बच्चों का नृत्य–संगीत, चुटकुले आदि कार्यक्रम प्रमुख थे। कार्यक्रम का आखिरी पड़ाव हौजी–गेम था। कार्यक्रम की सफलता में सर्वश्री राजकुमारजी अग्रवाल, गोविन्दजी मस्करा एवं नरेशजी मित्तल का योगदान उल्लेखनीय रहा।

- प्रेषक : कैलाश चन्द्र काबरा, शाखा मंत्री

मुजफ्फरपुर महिला मंच

मुजफ्फरपुर के मुशहरी ब्लॉक के गंगापुर गांव में २८ दिसम्बर को श्री राम खीचड़ी का आयोजन किया गया जिसमें मुजफ्फरपुर महिला मंच की अध्यक्षा सर्वश्री श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल, मधु पंसारी (मंत्री) सदस्या निर्मला लड्ढा, चंदा बंका, मेघा ड्रोलिया तथा सर्वश्री सीताराम बाजोरिया, महावीर लड्ढा, कृष्ण ड्रोलिया की उपस्थित से कार्यक्रम सम्पादन किया गया।

पूर्वोत्तर प्रान्तों से फैशन डिजाइनिंग में स्वर्ण पदक प्राप्त करनेवाली
प्रथम छात्रा सोनल गाड़ोदिया

डिब्रूगढ़ (असम) की सोनल गाड़ोदिया जिसने निफ्ट (नेशनल इंसीट्यूट ऑफ फैशन वेकनालॉजी, मुम्बई) से बी. एफ.टेक. (फैशन डिजाइनिंग में स्नातक) परीक्षा प्रथम स्थान प्राप्त कर सन् २००७ में उर्त्तीण की। उसे शिक्षा क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सफलता हेतु निफ्ट नई दिल्ली में दिनांक २४ अक्टूबर को सम्पन्न दीक्षान्त समारोह में माननीय केन्द्रीय कपड़ा मंत्री श्री शंकर सिंह बाघेला के कर–कमलों द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। फैशन डिजाइनिंग के क्षेत्र में सोनल उत्तर–पूर्व से स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली सम्भवतः प्रथम छात्रा है। निफ्ट भारत की एक प्रतिष्ठित एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्था है जिसका संचालन भारत सरकार के कपड़ा मन्त्रालय द्वारा होता है। हमारे देश के प्रायः सभी ख्यातिप्राप्त फैशन डिजाइनर इसी संस्था के स्नातक रहे हैं। कुमारी सोनल डिब्रूगढ़ के जानेमाने व्यवसायी एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री बसन्त एवं श्रीमती सरोज गाड़ोदिया की सुपुत्री है।•

गौरवान्वित हुआ गोंदिया का मारवाड़ी समुदाय

गोंदिया (प्रति.) : श्री मारवाड़ी युवक मंडल गोंदिया नगर के समस्त मारवाड़ी समुदाय की सर्वोच्च सामाजिक संस्था है जो अपने आप में अनुठी है एवं जिसकी विशेषता है सात समाजों से मिलकर बना संगठन, जो इन्द्रधनुष के रंगों की तरह अपनी घटा बिखेरता है। श्री मारवाड़ी युवक मंडल के अंतर्गत श्री अग्रवाल समाज, श्री राजस्थानी ब्राह्मण समाज, श्री माहेश्वरी समाज, श्री खंडेलवाल समाज, श्री जैन समाज (ओसवाल एवं राजस्थानी दिगंबर) श्री राजस्थानी स्वर्णकार समाज, श्री सेन समाज का समावेश है एवं समस्त समुदायों की एकजुटता देखते ही बनती है। श्री मारवाड़ी युवक मंडल की स्थापना सन् १९३३ –३४ में तत्कालीन नौजवानों ने आजादी के आंदोलन में सहभाग लेने एवं अनेक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के उद्देश्य से की थी जिसने ७५ वर्षों का लंबा सफर तय करने के पश्चात आज वटवृक्ष का स्वरुप धारण कर लिया है। इसी श्रृंखला में संस्था द्वारा सन् १९५८ में श्री राजस्थान शिक्षण समिति की स्थापना की गई जिसके अंतर्गत आज श्री धन्नलाल मोहनलाल तिवारी बालक मंदिर, श्रीमती कौशल्यादेवी बजाज कन्या पाठशाला, श्रीमती आनन्दीदेवी सूरजमल अग्रवाल कन्या विद्यालय, श्रीमती कमलादेवी रामनिवास अग्रवाल राजस्थान कन्या कला कनिष्ठ महाविद्यालय का संचालन कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। श्री मारवाड़ी युवक मंडल गोंदिया नगर की शैक्षणिक, धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र है एवं संस्था द्वारा ७५ वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर को ''हीरक जयन्ती महोत्सव'' एवं शिक्षण समिति के ५० वर्ष पूर्ण होने के अवसर को ''स्वर्ण जयन्ती'' के रूप में अत्यंत धूमधाम, उल्लास एवं एकजुटता के साथ मनाया गया। दिनांक ९ दिसंबर से १४ दिसंबर २००८ तक आयोजित इस महोत्सव के दौरान सारा नगर चुनरिया रंग में रंग गया।

९ दिसंबर ०८ को श्री गीता जयन्ती एवं स्नेह सम्मेलन का उद्घाटन रास लीला एवं गीता श्लोक कम्प्यूटर प्रदर्शनी एवं हस्तकला प्रदर्शनी का उद्घाटन, माध्यमिक तथा कनिष्ठ महा–विद्यालयीन छात्राओं की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति, बुधवार दिनांक १० दिसम्बर ०८ को बालक मंदिर प्राथमिक पाठशाला तथा पूर्व माध्यमिक विभाग की छात्राओं के द्वारा विविध सांस्कृतिक, शैक्षणिक, बौद्धिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति तथा गुरुवार दिनांक ११ दिसम्बर ०८ को पुरस्कार वितरण एवं विद्यार्थियों के लिये प्रीतिभोज का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समिति की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर संस्था द्वारा संचालित विभिन्न स्कूलों तथा महाविद्यालयों में अपनी सेवा प्रदान करने वाले अध्यापक वृन्दों का भी सम्मान किया गया।

१२ दिसंबर ०८ से ''हीरक जयन्ती महोत्सव'' का शुभारंभ एक भव्य शोभायात्रा के साथ श्री अग्रसेन भवन से प्रारम्भ हुआ जिसमें समस्त मारवाड़ी समुदाय सम्मिलित हुआ एवं समापन तथा प्रसाद वितरण श्री झरिया मंदिर राजस्थानी लॉन्स में सम्पन्न हुआ। १३ दिसंबर ०८ को ''थर्माकोल पर साथिया सजाओ'' एवं ''मटकी सजाओ'', ''स्नेह शक्ति व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण'' एवं लघुनाटिका के रुप में ''बैनर प्रेजेंटेशन'०८ को कार्यक्रम रखा गया था जिसमें समाज बन्धुओं की सहभागिता एवं उत्साह देखते ही बनता था।

''स्वागत एवं अभिनन्दन समारोह'' दिनांक १४ दिसंबर ०८ को स्थानीय स्वागत लॉन्स एन्ड होटल में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रमुख अतिथि के रुप में केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री श्री प्रफुल्ल पटेल, सांसद एवं प्रख्यात उद्योगपति श्री राहुल बजाज, सांसद श्री श्रीगोपाल व्यास, सांसद श्री हेमंत खंडेलवाल, एस. कुमार ग्रुप के चेयरमैन श्री मुकुल कासलीवाल, मा. खाद्य एवं नागरी आपूर्ति मंत्री (म.शा.) श्री रमेश बंग, उद्योगपति श्री सुरेन्द्र रुईया, विधायक श्री गोपालदास अग्रवाल, विधायक श्री राजेन्द्र जैन, अ.भा. सेन समाज के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सेन, म्हाडा के सभापति श्री नरेश माहेश्वरी, भूतपूर्व नगराध्यक्ष एवं राईस मिलर्स असोसिएशन के अध्यक्ष श्री दामोदर अग्रवाल, उद्योगपति श्री ओ.जी. अग्रवाल, श्री शंकरलाल शर्मा, श्री हुकुमचंद अग्रवाल, जैसे विशिष्ठ एवं गणमान्य पधारे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता नई दिल्ली से पधारे प्रकान्ड विद्वान आचार्य श्री सोहनलाल ''रामरंग'' ने की। समारोह में समाज को अपना विशेष योगदान देने वाले महानुभावों एवं समाज के स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों तथा जिनका देहांत हो चुका है ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों के परिजनों का आए हुए सभी प्रमुख अतिथियों के हस्ते सम्मान हुआ एवं उनका अभिवादन किया गया। आए हुए सभी अतिथियों को आभार पत्र संस्था की ओर से प्रदान किये गए एवं अतिथियों द्वारा संस्था अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश अग्रवाल का शाल, श्रीफल से सम्मान किया गया।

श्री मारवाड़ी युवक मंडल के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश अग्रवाल ने इस अभिभूत कर देने वाले सहयोग के प्रति सभी समाज बन्धुओं, महिलाओं एवं युवा साथियों के प्रति अपना मनपूर्वक आभार व्यक्त किया है।◆

मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा

"पूर्वांचलीय वैदिक सम्मेलन-२००८" दिनांक २६,२७,२८ दिसम्बर २००८ को त्रिदिवसीय सम्मेलन श्री दक्षिणपाट रमानन्ददेव क्षेत्र, सोटाई में सम्पन्न हुआ। इस वैदिक सम्मेलन में उपाध्यक्ष का भार श्री बाबूलालजी गगड़ को तथा उपदेष्टा का भार श्री जुगल किशोर सिंघी को दिया गया। वैदिक

सम्मेलन में मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा द्वारा किये गये कार्यों की सभी ने प्रशंसा की। इन तीन दिनों के कार्यक्रम में २७–१२–२००८ को मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा द्वारा सुबह नाश्ता से दोपहर व रात्रि के भोजन में करीबन ३००० भक्तगणों की व्यवस्था की गई। इस कार्यक्रम में सदस्य बाबूलाल गगड़, श्री जुगल सिंघी, डॉ० शिवभगवान अग्रवाल, श्री श्रीकिशन बजाज व श्री राजकुमार सेठी (सचिव) सभी कार्यों में उपस्थित रहे। सुबह नाश्ता, दोपहर व रात्रि के खाने में सम्मेलन के इस पुनीत कार्य में श्री मुरली–धरजी खेतान, श्री रामावतारजी बजाज, श्री बाबूलालजी गगड़, श्री भोमारामजी प्रजापति, श्री आनन्द अग्रवाल, श्री नरेन्द्र जैन, श्री विनोद सराफ, श्री महेश बेड़िया, मेसर्स सन स्टील, डॉ० हरिनारायण अग्रवाल, श्री जुगल किशोर सिंघी, आसाम स्टोर, राधेश्याम घनश्याम, श्री धेलीया (श्री गोपाल मोर) का सहयोग रहा।

•मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा द्वारा दिनांक ११ जनवरी २००९ को अखिल असम वकील संस्था द्वारा श्री ओंकारमलजी माहेश्वरी को अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुने जाने पर अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। सम्मेलन के बैनर तले बहुत संगठनों व संस्थाओं ने फुलाम गमच्छा द्वारा उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

"शिल्पी दिवस"

पर ज्योतिप्रसाद अग्रवाल का स्मरण

असम की एक पुरानी जानीमानी संस्कृति, साहित्यिक मंच, जिसका नाम असम के बाहर भी है वो है। ***"असम साहित्य सभा"***। दिनांक १७–०१–२००९ "शिल्पी दिवस" ज्योतिप्रसाद अग्रवाल के स्मरण पर प्रत्येक वर्ष उस मंच द्वारा शिल्पी दिवस मनाया जाता है तथा साहित्यकार, शिल्पीकार व कवि आदि को चयनित करके उनका अभिनन्दन किया जाता है। इस साल मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा के उपसचिव श्री श्रीकिशन बजाज को शिल्पकार के रूप में साहित्य सभा के अपने भवन में इनका अभिनन्दन किया गया। यह हमारे समाज के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि व गर्व की बात है। श्री बाबूलाल गगड़ असम साहित्य सभा, जोरहाट के कार्यकारिणी सदस्य भी हैं।•

सीकर नागरिक परिषद द्वारा:

हामीरागाछी में कम्बल वितरण

सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) द्वारा आराधना ट्रस्ट, हामीरागाछी (हुगली) में स्थानीय ग्रामीणों में कम्बल वितरण किया गया। परिषद अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद सोभासरिया ने कहा कि महात्मा गाँधी सेवा कमेटी, दमदम एवं झारखण्ड के आदिवासियों के पश्चात हुगली जिले के ग्रामीण इलाके में कम्बल वितरण कर परिषद अपने को सौभाग्यशाली समझती है।

- दामोदर प्रसाद बिदावतका, सचिव

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

२५ दिसम्बर २००८ के सुबह ८ बजे मुजफ्फरपुर गौशाला में जाकर हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सैकड़ों गायों एवं उनके बछड़ों के बीच चुनी, भूसी, गुड़ इत्यादि चीजों का भोजन खिलाया गया। एवं तदुपरान्त विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। जिस उपरोक्त कार्यक्रम में नगर शाखा अध्यक्ष श्री विहारी लाल केजड़ीवाल, पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल, प्रमण्डलीय उपाध्यक्ष सीता राम बाजोरिया शाखा सचिव जगदेव प्रसाद नेमानी, संयुक्त सचिव शिवहरी अग्रवाल, बद्री प्रसाद अग्रवाल, पुरुषोत्तम दास चौधरी, हनुमान प्रसाद पोद्दार, मूल चन्द शर्मा, किशन प्रसाद मेमानी अनिल कुमार ढांढनिया, परमेश्वर लाल केडिया इत्यादि गणमान्य पदाधिकारीगणों ने उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाया। मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में दिनांक १५ जनवरी २००९ के अपराह्न १ बजे दिन में मुजफ्फरपुर के अन्तर्गत मुराटरी अंचल मुजफ्फरपुर के गंगापुर गांव में डेनमार्क स्कूल के प्रशंसा में लगभग ६०० गरीब मुसहर जाति के औरतों–मर्दो एवं उनके बच्चों को खिचड़ी बनवा कर भोजन करवाया गया एवं उसके उपरान्त उसे सबके के बीच कंबल और वस्त्र का वितरण भी किया गया।

- जयदेव प्रसाद नेमानी
नगर शाखा मुजफ्फरपुर
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

वेद प्रकाश अध्यक्ष, देवेन्द्र महासचिव

वेद प्रकाश अग्रवाल देवेन्द्र चौधरी बजरंगलाल अग्रवाल

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की बलांगीर शाखा के वर्ष २००९–१० हेतु सांगठनिक चुनाव आज एमबी धर्मशाला में संपन्न हुआ। इसमें ***श्री वेदप्रकाश अग्रवाल (बर्त्तन फेक्ट्री)*** अध्यक्ष के पद के लिए चुने गए। इन्हें १६१ मत मिले। महासचिव के पद पर ***श्री देवेन्द्र कुमार चौधरी (सत्यम शिवम सुन्दरम फेब्रिक्स)*** ५४ के मुकाबले ११६ मत प्राप्त कर विजयी हुए हैं। कोषाध्यक्ष हेतु ***श्री बजरंगलाल अग्रवाल (बालाजी ऑटो)*** ने १०३ मत प्राप्त किए। इनके विरुद्ध खड़े तीन उम्मीदवारों का सम्मिलित वोट केवल ७२ हैं। ज्ञातव्य है कि अनेक वर्षो के बाद उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के बलांगीर शाखा हेतु सांगठनिक चुनाव संपन्न हुआ है।•

मारवाड़ी सम्मेलन गांव-गांव तक पहुंचे-लाठ

प्रांतीय अध्यक्ष लाठ का टिटिलागढ़ दौरा

मारवाड़ी सम्मेलन गांव–गांव तक पहुंचे एवं जन समाज कार्यों के लोगों को अवगत कराने का प्रयास करें। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, उड़ीसा प्रांत के मनोनीत अध्यक्ष व पूर्व राज्यसभा सांसद सुरेन्द्र लाठ ने टिटिलागढ़ दौरे के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में यह बातें कहीं। उनके टिटिलागढ़ प्रवास पर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा समाज की सभी समस्याओं को लेकर मारवाड़ी समाज की एक बैठक का आयोजन श्री महावीर पंचायती धर्मशाला में किया गया है।

बैठक की अध्यक्षता शाखा अध्यक्ष मामराज जी जैन ने की मंच पर पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगदीश प्रसाद अग्रवाल, प्रान्तीय अध्यक्ष सुरेन्द्र लाठ, शाखा अध्यक्ष मामराज जैन, शाखा सचिव सोहन लाल गुप्ता एवं अग्रवाल सभा अध्यक्ष हनुमान प्रसाद अग्रवाल आसीन रहे। सर्वप्रथम शाखा अध्यक्ष द्वारा सुरेन्द्र लाठ एवं उनके साथ पधारे दिनेश अग्रवाल, विजय केडिया का हार्दिक स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि सुरेन्द्र लाठ ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में मारवाड़ी सम्मेलन की सदैव उपयोगिता की जानकारी देते हुए, सम्मेलन के काम में सक्रियता बढ़ाने के लिए सबका आह्वान किया।

बैठक के अंत में शाखा सचिव मोहन लाल गुप्ता ने धन्यवाद दिया। बैठक को सफल बनाने के लिए गोपाल लाल, राजेश अग्रवाल, सूरज सोनी, प्रकाश गोयल एवं सरोज अग्रवाल की भूमिका रही। मंच संचालन ईश्वर चंद्र जैन ने किया।•

श्री अरुणकांत अग्रवाल
मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष

जबलपुर: श्री अरुणकांत अग्रवाल को म.प्र.मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्ष चुन लिया था। इस अवसर पर श्री मुकुंददास माहेश्वरी ने उनका पुष्पहार से स्वागत किया। श्री अग्रवाल ने श्री रमेश गर्ग को महामंत्री का दायित्व वहन करने का अनुरोध किया है जिसे उन्होंने स्वीकार करते हुए संगठन को मजबूत करने का वचन दिया। इस अवसर पर सर्वश्री कमलेश नाहटा, महावीर प्रसाद पोद्दार, सुभाष सेकसरिया, संतोष ओसवाल, श्याम सुन्दर माहेश्वरी और पुरषोत्तम संघी आदि ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों का अभिनंदन किया।

वृद्धाश्रम

-दया सुमन दधीच

जैसा दो, वैसा लो - कहावत वेदप्रकाशजी के जीवन में खरी नहीं उतरी। उन्होंने अपने बेटे के लिए क्या नहीं किया। खून पसीना एक करके उन्होंने विश्रांत को पढ़ा-लिखा कर डॉक्टर बनाया। जब घर में चाँद सी डॉक्टर बहू आई तो चार बूढ़ी आंखो ने कितना वात्सल्यपूर्ण स्वागत किया था।

'विसू की माँ, घर में लछमी आई है। अब हमारे कोई कमी नहीं रहेगी।'

'भगवान करे ऐसा ही हो, लेकिन जमाने की हवा बहुत खराब है, विसू के बापू'।

और सचमुच बूढ़े वेदप्रकाश को पहले वक्त और बाद में जमाने की नजर लग ही गई। विश्रांत की मां का पीलिया बिगड़ गया और अन्ततः वह काल का ग्रास बन गई। पत्नी की सलाह पर विश्रांत ने वृद्ध बाप को वृद्धाश्रम भेज दिया और ५०० रुपएं प्रतिमाह उन्हें भेजने लगा।

एक दिन वृद्धाश्रम से फोन आया कि आपके पिताजी काफी बीमार हैं, मिल लीजिए, विश्रांत पत्नी को लेकर वृद्धाश्रम गया। मैनेजर ने बताया कि अभी कुछ देर पहले ही आपके पिताजी ने अंतिम सांस ली है। वह दो लिफाफे आपके लिए छोड़ गये हैं।

विश्रांत ने लिफाफे खोले। एक में १५००० रुपए तथा दूसरे में पत्र था। पत्र में लिखा था तुम बहुत उदार हो, बेटा। मुझे प्रतिमाह ५०० रुपए तुम भेजते थे। न मालूम तुम्हारा पुत्र इतना उदार हो, न हो, इसलिए ये रुपए मैंने तुम्हारे लिए बचाकर रखे हैं। भगवान न करे - तुम्हें वृद्धाश्रम में आना पड़ा तो यह धन तुम्हारे काम आएगा। - तुम्हारा पिता

-साभार : मारवाड़ी डाइजेस्ट मासिक

राजस्थानी भाषा में शब्दकोष चाहिए

- डॉ. साकरिया

कोलकाता। डॉ. भूपतिराम बदरी प्रसाद साकरिया ने शनिवार को कहा कि राजस्थानी भाषा को कथा, कहानी, काव्य संग्रह की नहीं, बल्कि अपनी भाषा के शब्दकोष की आवश्यकता है। वे राजस्थान सूचना केन्द्र में ***राजस्थानी प्रचारिणी सभा*** द्वारा आयोजित राजस्थानी भाषा दिवस पर विचार गोष्ठी में बतौर कार्यक्रम अध्यक्ष बोल रहे थे। भाषा की विशेष सेवा के लिए डॉ. साकरिया को सम्मानित किया गया। साल्टलेक लोक संस्कृति के अध्यक्ष विश्वनाथ चाण्डक ने कहा कि राजस्थानी सम्पन्न व सक्षम भाषा है। फिर भी इसे केन्द्र सरकार की बेरुखी का सामना करना पड़ रहा है। इसके लिए मारवाड़ियों से लेकर राजस्थान में सत्ता पर काबिज जनप्रतिनिधि सभी जिम्मेवार हैं। लेकिन खुशी की बात यह है कि अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने देश में अन्य भाषाओं के साथ राजस्थानी भाषा को भी मान्यता दी है।

राजस्थानी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रतन शाह ने कहा कि राजस्थानी भाषा का हिन्दी, अंग्रेजी से बैर नहीं है। त्रासदी है कि आर्थिक प्रगति के लिए जाने जाने वाले मारवाड़ी समाज को अपनी भाषा के प्रति जितना लगाव होना चाहिए उतना नहीं है। सभा का संचालन प्रमोद शाह ने किया। सभा में श्याम सुंदर बगड़िया, बालकिशन खेतान, राम निवास शर्मा (चोटिया) मौजूद थे।•

श्रद्धांजलिः

गौरी शंकर कायां नहीं रहे

वरिष्ठ समाजसेवी श्री गौरीशंकर कायां का दिनांक ९/२/२००९ प्रातः ९.३० बजे वेलव्यू अस्पताल में निधन हो गया। वे ८४ वर्ष के थे। राजस्थान के सूरजगढ़ में आपका जन्म सन् १९२५ में हुआ था। स्व. गौरीशंकर कायां अपने पीछे २ पुत्र अजय एवं अतुल तथा ४ पुत्रियों सहित भरा–पूरा परिवार छोड़ गए हैं। अपने सुदीर्घ जीवन में गौरीशंकरजी कई सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े रहे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आप अध्यक्ष भी रहे हैं। स्व. कायां अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (राष्ट्रीय कार्यकारिणी), भारतीय भाषा परिषद, नटराज युवा संघ सरीखे विशिष्ट समाज सेवी संस्थाओं से भी जुड़े रहे। उनके निधन से समाज में शोक की लहर दौड़ गई। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा, महामंत्री राम अवतार पोद्दार ने कायां जी के निधन को समाज के लिए अपूर्णिय क्षति बताया है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष सज्जन भजनका व मंत्री गोविन्दराम ढ़ाणावाला ने भी उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि रिलीफ सोसाइटी को उनका महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त था।•

स्व० मोती लाल सुरेका की पुण्य तिथि परः

मोती लाल सुरेका स्मृति ग्रंथ 'तर्पण' का लोकार्पण

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व० मोती लाल सुरेका की द्वितीय पुण्य तिथि पर मोती लाल सुरेका स्मृति ग्रंथ 'तर्पण' का लोकार्पण दिनांक ८.२.२००९ को पटना में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्र एवं पूर्व वित्तमंत्री श्री शंकर प्रसाद टेकरीवाल के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच, बिहार की अन्य सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य तथा अन्य स्थानों से आए गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

स्मृति ग्रंथ के प्रधान संपादक नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० (डॉ०) विश्वनाथ अग्रवाल हैं। स्व० सुरेका बिहार के जाने माने समाजसेवी एवं विधिवेत्ता रहें। मिथिला विभूति परिषद द्वारा सुरेका जी को 'मिथिला विभूति' से सम्मानित किया गया था।

- अंजनी कुमार सुरेका, संयोजक

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, February'2009
RNI Regd. No. 2868/68

समाज विकास के लिए विज्ञापन सहयोग

- प्रवासी मारवाड़ी समाज की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र के रूप में 'समाज विकास' हिन्दी मासिक का पिछले ५९ वर्षों से प्रकाशन किया जा रहा है।

- 'समाज विकास' ने संपूर्ण भारत एवं विदेशों में बसे प्रवासी राजस्थानी भाइयों–बहनों को माटी की सौंधी सुगंध समेटे सांस्कृतिक सूत्र में बांधा है। देश के १४ राज्यों में सम्मेलन की प्रांतीय शाखाओं की प्रतिनिधियों के साथ पूरे मारवाड़ी समाज को भावनात्मक रूप से बांधे रखने में 'समाज विकास' पत्रिका अनूठा मंच सिद्ध हुई है।

- 'समाज विकास' आपके सहयोग एवं समर्थन पर निर्भर है, आशा है आप विज्ञापन सहयोग प्रदान कर अनुगृहित करेंगे।

विज्ञापन दर :
रंगीन वेक कवर पृष्ठ: १०,०००/– रंगीन कवर पृष्ठ ७,५००/–
साधारण श्वेत–श्याम पृष्ठ ५०००/– आधा पृष्ठ २५००/–

नन्द लाल रुँगटा	राम अवतार पोद्दार	आत्माराम सोंथलिया	नन्दकिशोर जालान	शम्भु चौधरी
अध्यक्ष	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	सम्पादक	सह-सम्पादक

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com